आचार्य श्री प्रवचन

(23.10.2020 से 13.01.2021 तक)

भाग–16

गुरुवर की वाणी,
बने सबकी कल्याणी

अन्य भाग हेतु : 108guruvani.blogspot.com

संकलन :
मुनिश्री 108 संधानसागरजी महाराज

नेमी नगर,
जैन कॉलोनी

प्रवेश

२३-१०-२० भारतीय संस्कृति - स्वस्थ संस्कृति शुक्रवार

- कर्मों के आगे किसी की भी नहीं चलती। दीक्षा के बाद प्रथम चातुर्मास है जब स्थापना के बाद जैन नगर की ओर आ गये।
- कोरोना के कारण सामुहिक असाता का ऐसा उदय आया जो वर्ष भर तक चल रहा है।
- असंयमी होकर भी कोरोना ने सबको संयम का पाठ पढ़ा दिया, आप लोग संयम महोत्सव मना रहे हैं। द्विविग्रह, होटल, रात का सब छूट गया।
- भारतीय संस्कृति में ही संयम की आराधना होती है, विश्व के लिए एक मिशाल है।
- सारे विश्व में जब हाहाकार मच रहा था - भारत सबको आयुर्वेद का काढ़ा पिला रहा है।
- शाकाहार एवं शुद्ध औषधी भारत के पास ही है।
- रोग हो और चिकित्सा न हो ऐसा हमारे आयुर्वेद में है ही नहीं, अब सब मानने लगे हैं।
- भारत में आहार ही औषध है, जो शक्तिप्रद, वीर्यप्रद, एवं बुद्धि के विकास में सहायक होता है।
- ऐलोपैथी में जहाँ एक माह लगता है वहीं आयुर्वेद में स्वस्थ होने में 7 दिन मात्र लग रहे हैं।
- अध्यात्म को सबके सामने रखने वाला भारत ही मात्र देश है।
- प्रवचन न सही दर्शन ही मिल जाये। उपयोग हो जाये। हम आगे
- ड्राइवर (चालक) गाड़ी को चलाकर पहले देख लेता है।

०००

शरदपूर्णिमा

31-10-20 संकल्प से परिवर्तन शनिवार

संस्मरण - देहली के तिहाड़ जेल के कैदियों ने आचार्य श्री के नाम एक खुला पत्र लिखा। जो प्रतिदिन गुरुजी की फोटो के सामने प्रार्थना - पूजा - भक्ति करते थे। उन्होंने लिखा - "बाबा आप कब आओगे?" तब आचार्य श्री ने तात्कालिक बुद्ध को आशीर्वाद भेजूं ऐसा सोचकर एक हायकू बनाया - "भले ही दूर हूँ, निकट भेज देता, अपनापन।"

विद्या-वाणी

- जैसा पत्र कैदियों ने लिखकर भेजा, वैसा कोई जैनी भाई लिखकर नहीं भेज पाता।
- भीतरी परिवर्तन ही एक मात्र धर्म का प्रतीक होता है।
- दूर भले ही रहो परन्तु आप अपनापन को भेज ही सकते हो।
- जो भी संकल्प लो उसका पालन जीवन पर्यन्त करना है। उसी संकल्प से जीवन में आमूल-चूल परिवर्तन आये बिना नहीं रहता।
- जेल में कैदियों के इस परिवर्तन को देख मुझे इस युग में भी सतयुग का नजारा दिख रहा है।
- यहाँ जड़ को नहीं चेतन को महत्व दिया जाता है। हाँ! पैसे वालों की ओर इसलिए देखते है ताकि उनका परिग्रह सदुपयोग हो सके। ooo

विजयनगर

5-11-20 नौकर नहीं, उद्योगपति बनें, गुरुवार

- अब वन टू थ्री की संस्कृति छोड़ दो और एक दो तीन की संस्कृति अपनाओ जो रत्नत्रय का प्रतीक है।
- नौकरी की अपेक्षा से विदेशी संस्कृति पर ध्यान है, जहाँ न तो भगवान हुये हैं, न ही आगे होंगे।
- भारत में नौकरी नहीं कामकाज देकर उद्योगपति बनाये जाते हैं। स्वाश्रित बनने की कला सिखायी जाती है।
- विदेशों में जीवन व्यसनों से ही ग्रसित हो जाता है, जब की निर्व्यसन होने का पाठ भारतीय संस्कृति में घुट्टी में पिलाया जाता है।
- आदर्श पुरुषों को जिस समय याद करो वही समय दिपोत्सव का कहलाता है।
- लक्ष्मी तो मखमल की गादी पर सोती है और आपको सर्दी में भी कम्बल भी नसीब नहीं होता।
- भारतीय संस्कृति में जड़ का महत्त्व नहीं-चेतन का है।
- विश्वास मस्तिष्क में नहीं दिल में रहता है। ज्यादा सोचते हैं तो बहक जाते हैं।
- जितनी राशि दान में दे रहे हैं उससे भी कई गुना वर्षों तक यहाँ मन्दिर बनते जा रहा है।
- हमारा इतिहास राग का नहीं वीतराग का इतिहास है।
- समय मिलने पर नहीं, समय निकालकर धर्म करना चाहिए।

□ □ □

6-11-20 श्वान से लें शिक्षा शुक्रवार

जिस प्रकार कुत्ता कृतज्ञता से भरा होता है, स्वामीभक्त होता है, रात्रिजागरण भी कहलाता है उसीप्रकार एक साधक को साधना हेतु इन बातों का ध्यान रखना परम आवश्यक है।

अनमोल - वचन

- कैमरा बाहर का चित्र उतारता है किन्तु ऐक्सरा भीतर का चित्र लेता है। हमें एक्सरे की तरह भीतरी भावों पर नजर रखना चाहिए तभी पता लगेगा कि हमारे भीतर क्या-क्या विकृति है।
- संस्मरण - जंगल जाते समय एक-दो कुत्तों को देखा जो ठेले पर फल (केले आदि) रखें थे पर उधर देखा तक नहीं मतलब बिना दिये लेंगे नहीं। इसी तरह हर व्यक्ति करें तो सर्वत्र शान्ति स्थापित हो जाये।
- साधु भी स्वयं तो बनाते ही नहीं। दाता प्रसन्नता से बुलाता है तब जाते हैं, वहाँ भी बिना दिये कुछ भी ग्रहण नहीं करते।
- पराये वस्तु पर अधिकार जमाना ही संसार का कारण है।
- थोड़ा भी निकालेंगे तो आसमान सा बहुत बड़ा फल मिलेगा।
- श्वास निद्रा नहीं लेता और आप खुर्राटे भरते रहते हैं, ऐसे में आपकी एवं आपके सामान की रक्षा कौन करेगा?
- प्रकाश पहुँचाना हमारा कर्तव्य है परन्तु आँखे खोलना आपका परम कर्तव्य है।

○ ○ □

7-11-20 बीजत्व नष्ट करने का उपाय · शनिवार

जिस प्रकार से वृक्ष एवं फल अथवा बीज का अनादि से संबंध है उसी प्रकार से इस देह एवं आत्मा का भी अनादि से सम्बन्ध है।

जिस प्रकार एक बार बीज को भुन दें, जला दें तो वह पुनः अंकुरित नहीं होता उसी प्रकार यदि एक बार कर्मों को समूल नष्ट कर दें तो पुनः जन्म-मरण नहीं होगा। राग-द्वेष रूपी बीजत्व को जलाना होगा।

विद्या-वाणी

० राग-द्वेष से बंध, बंध है तो उदय, उदय में पुनः राग-द्वेष यही संसार परिभ्रमण का कारण है।

० हमारे राग-द्वेष जल जाये ये इरादा भीतर से होना चाहिए। अभी तो हम राग-द्वेष से जुड़े रहे हैं।

० वीतरागता के सामने पुण्य-उदय से बैठे हो तो सार्थक तभी होगा जब बीजत्व को जला दें - सुखा दें - अंकुरण होने की शक्ति को नष्ट कर दें।

० आपको दुनिया नहीं छोड़ना, दुनिया से मतलब छोड़ना है।

० भगवान कोई गतिविधी नहीं करते और हम कभी भी गतिविधी से रहित नहीं होते, यही संसार दशा है।

० भगवान के पास जाने का सौभाग्य पाना चाहते हो तो उस प्रकार का टिकिट हाथ में लेना होगा। इरादा तो पक्का रखो - तभी उन जैसा बन पाओगे। ० ० ०

8-11-20 भाव प्रधान है धर्म रविवार

"अष्ट द्रव्य यदि पेट में खायें तो पुण्य नहीं लेकिन गुरु चरणों में चढ़ायें तो महापुण्य है। इसीतरह गन्ध भी है और उदक भी पर वह गन्धोदक नहीं जब कि गुरु चरणों की धूल भी उस गन्धोदक से बहुत पवित्र मानी जाती है।"

गुरु-वाणी

- पीछे से आये हो, पीछे ही रहीयो। पंक्तिबद्ध होकर आना है।
- धर्म हमेशा-हमेशा भाव प्रधान ही होता है द्रव्य प्रधान नहीं।
- प्रभु ने मान को जीता, हमें भी जीवन पर्यन्त उसे जीतने का पुरुषार्थ करना है।
- कषायों से ही संसार बढ़ रहा है।
- एक हाथ से देते हो तो हमारा एक हाथ से आशीर्वाद, यदि दोनों हाथ से दोगे तो दोनों हाथों से आशीर्वाद मिलेगा।
- बाजार में उसे अहोभाग्य मानते हैं जिसके पास पैसा रहता है, यहाँ उल्टा है जिसके पास प्रभु चरणों में चढ़ाने के बाद कम रह गया वह अहोभाग्य है और पुरा ही चढ़ा दिया वह महा भाग्यवान है।
- वापस नहीं जाना, यदि मेरे जैसे बनना है तो संकल्प ले लो वापस नहीं जाना है।
- बिना भगवान के मन्दिर नहीं वैसे ही बिना भक्ति के भक्त नहीं।

□ □ □

9-11-20 "दान करो अगरबत्ती सा" सोमवार

कुबत कम गुस्सा ज्यादा
लक्षण है पीर जाने का।
आमद कम खर्चा ज्यादा
लक्षण है मिट जाने का।।

"जिस प्रकार छोटी सी अगरबत्ती को जलाने से पुरा कमरा सुवासित हो उठता है उसी प्रकार हमें स्वयं जलकर भी दूसरों को सुख-शांति आनन्द प्रदान करना चाहिए।"

"अनमोल-वचन"

- अगरबत्ती में आग रहते हुये भी भीतरी आग को शांत करने में कारण बनती है।
- द्वेष रूपी आग को मत फैलाओ।
- ऐशो-आराम को चाहने वाला व्यक्ति कभी भी प्रभु के निकट नहीं आ सकता। वह तो भगवान से बहुत दूर चला जाता है।
- हओ बोलना सीखो बुन्देलखण्ड का बहुत ही प्रिय शब्द है हओ।
- जितना कष्ट सहन करोगे उतना ही मीठास का अनुभव होगा।।
- हम लेने को तो भूल जाये मात्र देने को ही याद रखो। कड़वाहट नहीं मीठास डालो।

10-11-20 "हथकरघा के वस्त्रों का लाभ" मंगलवार

अहिंसक वस्त्र ही पहनने एवं छूने के योग्य है किन्तु आज हिंसक वस्त्रों का ही बोलबाला है। वस्त्र पहनने से ही व्यक्ति सभ्य माना जाता है। इस सभ्यता को भूल गये और हर कोई भी वस्त्र, फटा हुआ, कटा हुआ अपना लेते हैं।

पाँच लाभ अथवा महत्व

1. मन्दिर में प्रक्षाल का छन्ना हो तो मात्र शुद्ध हथकरघा का वस्त्र है।
2. जिनवाणी का अछार
3. पानी छानने का छन्ना
4. चोट लगने पर पट्टी
5. अन्तिम समय में कफन

उपरोक्त पांचों में हमेशा शुद्ध सूती अहिंसक वस्त्र काम में लेते है फिर पहनने में भी हथकरघा के वस्त्र ही काम में ले।

- वैदिक परम्परा से भी पूर्व की परम्परा है घर में सूत कातना एवं वस्त्र बुनना।
- मैं वाट्सअप का याद नहीं करता परन्तु आप लोगों को वाट्सअप मानकर अपनी बात सब तक पहुंचाना चाहता हूं।

ooo

11-11-20 ऐसे बनेगा जिन मन्दिर बुधवार

- मन्दिर शिलान्यास की बात आयी है, अभी भी सोच लो फिर वापस नहीं लौटना है।
- मंगलाचरण होने के बाद चरण पीछे नहीं बढ़ाना।
- निरन्तर चलते रहना है मतलब रुकना नहीं, लौटना नहीं एवं अतिविश्वास में भागना भी नहीं है।
- समाज-कमेटी एवं कार्यकर्ता सब मिलकर काम करने से ही सफलता मिलती है।
- कंधों पर भार लें एवं हाथों से कर्तव्य करें तभी कार्य होगा।
- कर्तव्यनिष्ठ ही दिन-रात संकल्प (लक्ष्य) को सामने रखता है।
- कार्यकर्ताओं का उत्साहित होना जरूरी है।
- भगवान एवं मन्दिरों को विभाजित न करें, इसलिए विजयनगर का नहीं यह मन्दिर पूरे इन्दौर का है।
- धन तेरस का शुभ मुहूर्त, स्वयं कह रहा है - मैं आ रहा हूँ।
- सांसारिक विजय से कोई प्रयोजन नहीं, आत्मा पर विजय पाना ही सच्ची विजय है फिर दुनिया की लक्ष्मी की कोई जरूरत ही नहीं पड़ेगी।
- शुभ दिन, शुभ भावों से जो शुभ प्रयास हो रहा है, हम भी उसके भागीदार बन जायें, ऐसी भावना है।

१२-११-२० लाभ देशी वस्त्रों के गुरुवार

- वन के पास जो होता है उसे उपवन कहते हैं, नगर के पास जो होता है उसे उपनगर कहते हैं। उपवन में जैसे शुद्ध हवा, बाग-बगीचा होते हैं वैसे ही यहाँ का वातावरण वातानुकूल है, बातानुकूल नहीं।
- व्यवस्था का अर्थ है आस्था को व्यवस्थित करने का उपक्रम।
- दो तरह के सूत (वस्त्र) होते हैं- देशी-विदेशी। देशी वस्त्र जितने लाभप्रद है उतने ही विदेशी सूत से बने वस्त्र हानिकारक। एक आरोग्य का हरण करने वाला है तो दूसरा आरोग्य को धारण। एक वातानुकूल है तो दूसरा बातों के अनुकूल
- विदेशी वस्त्र आरोग्य के सामने घुटने टेक देते हैं, अर्थात उनमें घुटन होने लगती है।
- विदेशी सूत के वस्त्र फटने के बाद जलाने पर दुर्गन्ध एवं पर्यावरण प्रदूषित होता है जब कि देशी सूत से बने वस्त्रों को जलाने के बाद राख भी औषधी बन जाती है और कपूर की भाँति उड़ जाती है।
- देशी सूत फटने के बाद भी गुदड़ी के लाल की तरह काम आता रहता है।
- भारतीय वस्त्र भारी नही, हल्का रहता है किन्तु सबका प्रभारी वही रहता है। आप भी भारी नहीं-प्रभारी (श्रेष्ठ) बनो।

ooo

प्रातः

13-11-20 पहली रोटी गैया की शुक्रवार

- चातुर्मास के बीच में मन्दिर का शिलान्यास होगा कभी सोचा भी नहीं होगा।
- कार्यकर्ता रात-दिन एक करते हैं तभी लक्ष्य में सफलता की प्राप्ति होती है।
- नाम इन्दौर का है विजय तो विजयनगर वालों को ही मिलेगी।
- 13 मन्दिरों के पंचकल्याणक में राजस्थान के अजमेर से भी मूर्तियाँ आयी। बहुत सुन्दर सभी देखकर प्रमुदित हो जाते हैं।
- शिलान्यास में कूवत के अनुसार पहले से ही नक्की - पक्का - (परिपक्व) करके आना है।
- पहली रोटी गैया की वैसा ही इस धर्मार्थ कार्य के लिए निकालना है।
- जैसे किसान सिट्टों में से पहले ही दाने चुनचुनकर निकाल लेता है उसी तरह आप भी अपनी आय में से कुछ हिस्सा मन्दिर के लिए निकालेंगे।
- विषय-कषाय से हटाकर विषयातीत होने का जिन मन्दिर एक सेतु है। साधन है।
- गगन चुंबी शिखर देख लोगों की पगड़ीयाँ नीचे गिर जायेगी।
- उत्साह-उमंग हो तो 1-2 घण्टे में ही काम, स्मृतिनगर, आवासा वालों की तरह कर सकते हैं।

□ □ □

13-11-20 मन्दिर शिलान्यास मध्याह्न

- तीन काल होते हैं - अतीत, अनागत एवं वर्तमान किन्तु एक चौथा काल भी होता है वह है - आपत्तिकाल।
- नाम लिखवाते हैं पर मरणोपरांत गुमनाम हो जाते हैं। यहाँ का नाम स्वर्ग में नहीं चलता। वहाँ का नाम कथंचित् बोलियों में यहाँ चलता है।
- जब तक भूतपूर्व न हो तब तक नाम चलता ही रहता है।
- जिस प्रकार से सरीता जब प्रारम्भ होती है तो पतली सी होती है फिर धीरे-धीरे अन्य सरीता से मिल विशाल सागर का रूप ले लेती है। अब सागर है सरीता नहीं। पर सागर का अस्तित्व बिन सरिता के नहीं।
- आप लोग भले ही बूंद हो पर सागर से बात करते हो।
- सागर का अस्तित्व तभी जब बूंद का अस्तित्व दिमाग में होगा।
- प्रभु सागर है और हम बूंद। बस बूंद ये ध्यान रखें ~~कि~~ मैं भी विराट सागर का रूप ले सकती हूं।
- पाई का - इकाई का अस्तित्व लैसे कुछ नहीं पर मूल तो यही है इसी से रुपया बनता है।
- स्वर्ग की पूरी सम्पदा ~~के~~ बराबर सौधर्म इन्द्र के ~~मुकुट~~ के मध्य में स्थित वह हीरे की कणिका है परन्तु हमारे पास उससे भी बढ़कर सम्पदा है - मूल्य पहचाने तो।
- मूल्य न जानने से काँच-कोडीयों में हम कीमत लगा रहे हैं। बर्बाद कर रहे हैं।

- जो उस हीरे का मूल्य समझता है, वह कभी भी मोल-भाव नहीं करता क्योंकि वह तो अनमोल है, मौलिक है; उसे तो जौहरी ही जानता है।
- जो आत्मा के सही स्वरूप को नहीं पहचानता वह सामने-सामने ही अवमूल्यन कर बैठता है।
- जब खोट निकालते जाते हैं तो अपने आप ही मूल्य सामने आने लग जाता है।
- जैसे-जैसे हीरे को जो खान से मिला था उसे शान पर चढ़ाते जाते हैं उसमें पहलु निकलते जाते हैं तो देखने वाले के मुंह में पानी आये बिना रह ही नहीं सकता है।
- हीरे की परख वाला ही उसका मूल्य जानता है उसी तरह आत्मा की परख वाला ही उसकी व्यापकता को जान सकता है।
- हम अभी खान के नग एवं बूंद की भांति हैं किन्तु हीरे एवं सिन्धु को आकार लिये हुये हैं।
- अभी भी खान में खनन कार्य जारी है हमें खोदते एवं खोजते जाना है। जो खोजेगा उसी को मिलेगा। दूसरों के लिए मैं नहीं खोज सकता।
- अपने आप के बारे में ही सोचना, जानना; अध्ययन करना है और पूछताछ भी अपने आप से ही करना है।
- मेरी दशा क्या है, कैसी है, क्यों है इसको सोचेंगे तो प्रभु बनने का रास्ता अवश्य प्रशस्त होगा।

- दुनिया के उद्योग से हम मालामाल नहीं होंगे। हमें मालामाल बनना है तो ताला-कुंची बंद करके अपना उद्योग स्वयं करना होगा।
- प्रभु ने ऐसा ही उद्योग किया तभी आज हमारे आदर्श बन गये हैं।
- प्रत्येक के पास वह मौलिकता विद्यमान है, जो प्रभु ने प्राप्त किया है।
- मौली का व्याकरण में अर्थ मुकुट होता है और मुकुट कभी भी हाथ में नहीं रखते सिर पर धारण करना होता है। उसी तरह भीतर के उन भावों को शिरोधार्य करें।
- हमारी इच्छा - मांग ही हमारी बाधा का कारण है। बाधा से ऊपर उठना है तो इच्छा-क्षुधा-प्यास सबको समाप्त करना होगा।

"उदाहरण"

"जैसे प्रतिदिन बर्तन मांजते हो। साफ हो जाने पर सुखाते हो (धूप में या अग्नि पर) ताकि पुराने संस्कार न रह जाये तभी आप उस बर्तन में घी, दूध, दही आदि रखते हो इसी प्रकार संसारी प्राणी की दशा होती है। उसे सुन संस्कारों को सुखाना अनिवार्य है। बिना सुखायें काम में नहीं ले सकते।"

महावीर निर्वाणोत्सव के पूर्व (चतुर्दशी)

14-11-20 बिन पानी सब सून शनिवार

- कल धन्य तेरस थी, आज चतुर्दशी सांवत्सरिक प्रतिक्रमण का दिन शनिवार, सर्वार्थ सिद्धि योग, कल रविवार वीर निर्वाण का दिन, ये त्रिदिवसीय संशोधित मुहूर्त काल का योग आपको प्राप्त हुआ।
- स्थापना रेवतीरेंज में और निष्ठापना विजय नगर में ऐसा पहली बार ही हुआ है।
- भारत के मध्य में मध्य प्रदेश है, मध्य प्रदेश के मध्य में इन्दौर है और इन्दौर के मध्य में यह विजय नगर है।
- जिस प्रकार समोशरण में अलग-अलग खाने बने होते हैं उसी प्रकार इन्दौर महानगर में अलग-अलग उपनगर बने हैं। सबने लाभ लिया।
- बिन पानी सब सून - लगभग 20 वर्ष से रेवतीरेंज में जमीन लेकर रखी हुयी थी पर केवल गौशाला थी अन्य कोई योजना नहीं थी। जब प्रतिभास्थली खोलने की बात आयी तो हमने कहा पहले पानी तो निकालो तभी तो व्रती बहनों, जिनालय आदि को कर पायेंगे; योग से इन लोगों ने पानी खोजा एवं खोदा भी। अच्छा मीठा पानी फूट पड़ा, मैं समझ गया यहाँ की धरती फलदायी है।
- मनुष्य का सबसे प्रबल शत्रु आलस होता है।
- कछुआ की भांति चलें खरगोश की तरह नहीं। ▫ ▫ ▫

वीर निर्वाण लाइव
15-11-20 कैसे हों भगवान के दर्शन रविवार, प्रातः

- आज भगवान महावीर के विदा होने का दिवस है, आप कह रहे हैं कहाँ गये-3, वे कहते हैं - मैं यहीं हूँ-3
- मुझे देखना चाहते हो तो इन नयनों, उपनयनों (चश्मा) को बंद कर देना होगा तभी मेरा दर्शन होगा।
- शिष्य एवं शीशी दोनों पर डॉट जरूरी है पर ज्यादा जोर से नहीं अन्यथा भीतर का घी बाहर नहीं निकल पायेगा
- शुद्धि-पत्र लिखा मतलब भीतर जो भी है वह अशुद्ध है। अशुद्धि-पत्र लिखें तो फिर भी ठीक और आज तो जो शुद्धि पत्र लिखा गया उसमें पहले से भी ज्यादा अशुद्धि देखने को प्राप्त होती है।
- अभी भारत में शुद्धि आयी। 9-10 महिने घर से बाहर ही नहीं निकले क्यों कि कोरोना न हो जाये? कोरोना आता है तभी संयम पालन होता है।
- भगवान महावीर कहीं गये नहीं, बस हमारे पास वो साधन नहीं जिससे उन्हें देख सकें। जो हाथ में है उन्हें फेंकना पड़ेगा।
- जैसे बैंक के लॉकर का एक ही (पासवर्ड) नम्बर तभी खुलता है वैसे ही भगवान महावीर के उस नम्बर को याद रखो तभी मोक्षमार्ग का दरवाजा खुलेगा।
- भगवान महावीर अच्छा चौड़ा साफ-सुथरा रास्ता देकर गये हैं। आपको मार्ग बनाना नहीं है बस बना है उस पर चलना है।

ooo

विजयनगर
15-11-20 पिच्छिका परिवर्तन समारोह मध्याह्न

- सोचने मात्र से कार्य नहीं, संकल्प लेकर चलने से कार्य होता है।
- आयानुसारी व्यय = आय के अनुसार व्यय हो। उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य यही सत् है।
- भावना भव नाशनी कही गयी; आपकी भावना भव का नाश करने वाली हो।
- कार्य को जो प्रारम्भ कर देता है वही अन्तिम लक्ष्य तक पहुँचने में सफल हो सकता है।
- रोटी कोई नहीं खाता, ग्रास-ग्रास करके ही रोटी खायी जाती है इसी प्रकार यहाँ जिनालय का कार्य शुरु हो गया अब धीरे-धीरे करके पूर्ण करना है।
- रोटी खाने से नहीं उसका पाचन सही से होने पर शरीर चल रहा है। अद्भुत सिद्धान्त है यह। दान आया पर सदुपयोग से ही कार्य होगा।
- अपव्यय से बचें। व्यय से काम होता है अपव्यय से नहीं।
- कुछ हाथों से - कुछ दांतो से, कुछ आंतो से, कुछ बातों से चर्वण करते हैं तब जाकर भोजन का पाचन होता है।
- शास्त्र का अध्ययन करना मात्र स्वाध्याय नहीं, स्व का अध्ययन करना ही वास्तविक स्वाध्याय है।
-

प्रातः विहार 3 Km. महालक्ष्मी

महालक्ष्मीनगर
16-1-20 पशुपती की अर्चना सोमवार

- रेवतीरेंज से प्रवेश किया - महालक्ष्मी नगर से बाहर निकल रहे हैं।
- इन्दौर नगर एवं उपनगरों में संस्कार, नीति-न्याय के साथ रहते हुये वीतरागता की उपासना कर रहे हैं।
- देहातीत होने की भावना से कर्तव्य हो, पुराण पुरुषों ने अपने जीवन काल में ऐसे ही कार्य किये।
- नगर-घर भले ही नूतन बन रहे हैं, बनें कोई बाधा नहीं पर संस्कार तो प्राचीन ही रहें। हमारी संस्कृति, रिति-रिवाज को कभी न छोड़ें।
- नूतन संस्कृति विदेशी हवा से पल्लवित एवं उत्पन्न होती है जब कि प्राचीन संस्कारों में भारत की गंध झलकती है।
- मनुष्य ही नहीं तिर्यञ्च भी अपनी जाति के संस्कार अड़ोस-पड़ोस पर डालते रहते हैं।
- एक चित्र देखा - बहुत सारे कुत्ते एक गड्ढे को मिट्टी से भर रहे हैं, क्यों कि इस गड्ढे में एक कुत्ते का शव दफनाया गया है। मिट्टी डालने से उसे अन्य पशु-पक्षी क्षत-विक्षत नहीं करेंगे। ऐसे संस्कार/संवेदना जब पशु में भी है तो फिर आप तो पशुपति की उपासना करने वाले हो।
- जैसे एक-एक दिवस मनाया जाता है उसी प्रकार आज भी एक दिवस गाय-बैलों का होता है। (गोवर्धन पूजा)

o आज कंधो पर उनके जुआली आदि नहीं डालते, नहलाकर, सजाकर उनकी पूजा करते हैं।

o मनुष्यवर्धन कोई त्यौहार नहीं गोवर्धन कहा।

o सरकार भी मनुष्यों की संख्या कम हो ऐसे प्रयास करती है पर पशुओं की तो दिन दुनी रात चौगुनी वृद्धि ही हो।

o ध्यान रखना - मनुष्यों का पालन मनुष्य नहीं करते अपितु मनुष्यों का पालन पशु ही करते हैं। शास्त्रों में "पशुपाल्यो पेता" कहा।

o भगवान मनुष्य पति कम, पशुपति ज्यादा है।

o पुरे विश्व में मनुष्यों की संख्या कम हो जाये, इसके लिए अभियान चलाता है मतलब मनुष्य ही सब प्राणीयों के लिए कांटा है।

o मनुष्य को संयमित करना पड़ता है पशु तो सदैव संयमित ही (प्रकृति के अनुसार) रहते हैं।

o किसी भी तीर्थंकर का चिन्ह मनुष्य नहीं परन्तु वृषभ (बैल) आदि कई हैं। सर्प भी है।

o मनुष्य की पूजा नहीं पर सर्प की - नाग पंचमी कहते है

o कृषि, वाणिज्य, पशुपाल्योपेत्या इथं वार्ता कथिक ऐसा शास्त्रों में लिखा है। अतः पशुपालन से ही देश की समृद्धि होगी।

o कार्य सम्पन्न करना है तो अपव्यय बंद कर दो।

शान्ति - बड़जात्या काम o o o

कुधिया
बरफानी विद्यालय

17-11-20 (जाने मतलब ऋषभ विहार का) मंगलवार

○ भूख कितनी भी लगे पर परोसने वाला (माँ) जानता है कि इसकी वास्तविक भूख कितनी है। वह भूख को मारता नहीं उपशमन करके उसे और जागृत करता रहता है।

○ नहीं जा पाये देहली - जब महावीरा जी से विहार हुआ तो हम कामाँ - कोशी होते हुये देहली जा रहे थे। मार्ग में ही पता चला, वहाँ तो आपातकाल लग गया। तीनकाल तो सुने थे यह कौनसा चौथाकाल आ गया। बस वहीं से मथुरा-गोवर्धन होते हुये फिरोजाबाद में चातुर्मास हेतु आ गये। फिर बड़े बाबा के पास आये तो उन्होंने ही पकड़ लिया।

○ ऋषभ विहार वाले आये हैं - बड़े बाबा भी ऋषभ नाथ हैं एवं विहार तो चल ही रहा है मतलब महाराज एक जगह रुकते नहीं विहार करते रहते हैं।

○ केन्द्र में बड़े बाबा विराजमान हैं फिर केन्द्र की अलग से क्यों बात कर रहे हैं।

○ जैसे माँ की गोद या पालना में जब बच्चा करवट लेने लगता है तो सजग हो जाते हैं वैसे ही दानदाता भी आगे से ही तैयार हो जाते हैं।

○ हल को ऋषभ ही खेंचते हैं पाड़ा नहीं, इसलिए ऋषभनाथ से हल निकलेगा।

○ हाट पिपल्या वालों के हाट (बाजार) में हमारा कोई सौदा नहीं हुआ।

००८
रात्रि - मालवा विश्वविद्यालय खुडैल

डबलचौकी

18-11-20 बचें विरुद्ध राज्यातिक्रम से बुधवार

- गाड़ियाँ काफी हो तो एक चौकी से काम नहीं चलता, डबल चौकी रख दो।
- कर (tax) की चोरी न हो इसलिए डबल चौकी है।
- आचार्यों ने विरुद्ध राज्यातिक्रम का एक अतिचार रखा
- राज्य के विरुद्ध नहीं जो देना अनिवार्य है, वह देना है।
- सरकार का मतलब ही है आपके ही योगदान से आपके जीवन को उन्नत बनाना।
- ऐच्छिक प्रश्न तो छोड़-छाड़कर जा सकते है पर अनिवार्य प्रश्न को छोड़ नहीं सकते। tax (कर) देना अनिवार्य है।
- किसानों के लिए कर में छूट रखी क्यों कि अतिवृष्टि अनावृष्टि, रोग आदि से फसल नष्ट हो जाती है पर उद्योग वालों को तो कर चुकाना चाहिए।
- आज उद्योग वाले भी सरकार के सामने किसान बन जाते है, यह ठीक नहीं।
- सरकार के सामने कभी भी रोना नहीं चाहिए।
- कमाते हो तो कम क्यों देना? पूरा देना।
- इस प्रकार विरुद्ध राज्यातिक्रम का अर्थ डबलचौकी से हमने अर्थ निकाला।

संस्मरण ○ ○ ○

"50 वर्ष पूर्व चश्मे की बात आयी। हमने कहा हम चश्मा नहीं पहनेंगे। अनुसंधान किया। नींबू रस, शुद्ध घी, शुद्ध सरसों तेल, त्रिफला का उपयोग किया। आज भी आँखों से अच्छा दिखाई देता है।"

रात्रि = कर्णावटप्रवास

भमोरी
19-11-20 विश्व ने माना- आयुर्वेद की शक्ति को गुरुवार
o भारत की पहचान, अस्तित्व, शासन-पद्धति आदि पुरे विश्व के सामने अलग ही रूप में हैं।
o वैश्विक महामारी - कोरोना के सामने पुरे विश्व ने घुटने टेक दिये किन्तु भारत का काढ़ा सबके लिए अमृत बन गया।
o अमेरिका एवं विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसीलिए भारत में दो देहली एवं जयपुर में बड़े आयुर्वेद शोध संस्थान खोलने का सोचा है।
o कक्षा एवं परीक्षा में अंतर है। परीक्षा में जो क्रिया है उसका प्रयोग करना होता है। भारत परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ है।
o संत-समागम एवं अहिंसा से ही हम भारत की रक्षा कर सकते हैं।
o भारत अपना स्वाभिमान रखता है, अभिमान नहीं करता हाँ सदैव दूसरों का सम्मान करता है।
o कैंसर जैसे भयानक रोग का भी आयुर्वेद से इलाज संभव हैं, ये बात अब विदेश की संस्थायें एवं अमेरिका ने भी स्वीकार कर ली है।
o विश्व की जो भी चिकित्सा प्रणाली है उसमें किसी न किसी रूप से आयुर्वेद का हाथ होता ही है।
o चश्मा हटा लो, आँखे खोल लो। पश्चिमी हवा से बचना है।
o शाकाहारी ही नहीं मांसाहारी को भी यह विश्वास हो गया कि इस महामारी का कारण माँस का उपयोग था।
०००
रात्रि - अमरापुरा

बेडामऊ

20-11-20 राम-राज्य लाना है तो.... शुक्रवार

- वैभव के सामने रहने वाले राम एक कुटिया के सामने शोभा दे रहे हैं। उनके मुखमण्डल पर सदैव कमल की तरह प्रसन्नता रहती है।
- जगत की नश्वरता एवं परायेपन की अपेक्षा, विचार करने से महापुरुष कभी भी आकुल-व्याकुल नहीं होते।
- एक वो राम राज्य था जब राम कहते हैं मेरा नहीं भरत का राज्य है, भरत कहते है- मेरा नहीं ये तो राम का राज्य है और आज विधायकों का अपहरण हो रहा है। कहाँ छिपाकर रखा पता तक नहीं लगता।
- जो संसार की नश्वरता के बारे में सोचता है वह सर्वत्र सुख और शान्ति का अनुभव करता है।
- संसारी प्राणी कर्मों से जकड़ा है- जब चाहें, जो चाहें, जितना चाहें नहीं मिल सकता।
- जीवन कोहरे की भांति कब उड़ जाये, ओस की बूंद के समान है कब मिट जाये कोई पता नहीं।
- अपने को ही बड़ा मानना अज्ञान की परिणति है।
- आप बड़े पुण्यशाली हो जो आपका जन्म भारत जैसी पवित्र भूमि पर हुआ है। जहाँ ऋषि/मुनियों की पावन रज प्राप्त होती है।
- यहाँ तो शान्ति से बैठे हैं, आंगन में (आहार के समय) कोई भी विवेक नहीं रख पाता।
- जिसके जीवन में संतोष है, वही कभी दुःखी नहीं होता।

रात्रि- धनतालाब धार

हतनोरी

31-11-20 भावों का परिणाम शनिवार

- गाय मात्र सामान्य नहीं विशेष होती है, भेदोपभेद की अपेक्षा उसे कामधेनु भी कहते हैं।
- संतो को कुछ चाह / अपेक्षा तो होती नहीं फिर भला वे झूठ क्यों बोलेंगे?
- वीणा की धुन सुनकर गाय अपने थन से दूध गिराती है, ये शास्त्रोक्त तो था ही, कल ही किसी ने विदेश की घटना भी सुनायी।
- आप मारेंगे तो वह दूध नहीं, सींग दिखायेगी और यदि आप प्रेम - वात्सल्य देंगे तो वह भी दूध अमृततुल्य आपको देगी क्यों कि उसमें संवेदना है - चेतना है।
- बुद्धि मिली है उसका सदुपयोग करो। शास्त्रों में जो कामधेनु कहा उससे सीख ले लो।
- भारत में तो आप बाजा बजाओ या नहीं बजाओ तो भी दूध की नदियाँ बहती थी क्यों कि पशुओं के प्रति इतनी संवेदना होती थी।
- गीता आदि पुराणग्रन्थों के सुनने से भी दूध में वृद्धि होती है।
- परोपकार - सेवा की भावना खत्म, तो गाय ने भी दूध देना बंद कर दिया।
- अब तो भारत बातें करता है जैसे पतझड़ में पत्ते बातें करते हैं।
- पत्ते मतलब तास के पत्ते भी होते हैं। शराब, मांस, ताश अर्थात् जुआ। सरकार छूट दे तो कैसे देश तरक्की करेगा।
- प्रकृति की सब चीजें प्रकृति में रहती हैं, आप सदैव कण्डीशन में

ही रहते हैं।

0 आज श्वांस हेतु वायु नहीं, शुद्ध पानी नहीं एवं ईंधन भी खत्म, अब तो गैस आ गयी इसीलिये गैस की बीमारी हो रही है। भयानक रोग हो रहे हैं।

0 आधा भी नमोऽस्तु करोगे तो आशीर्वाद अवश्य मिलता ही है।

0 सरकार को मतदान तो देते हो उसके कान भी पकड़ा करो

0 कान पकड़ने से वहाँ के Point दबते हैं साथ ही कान पकड़ने से पश्चाताप के भाव भी होते हैं।

0 इस प्रकार खान-पान, रहन-सहन, पहनावा के माध्यम से हम पुनः उसी संस्कारीत जीवन को ला सकते हैं।

0 0 0

रात्रि - कलवार

"नारीयल पानी हरी में"

"कुछ लोगो का जिनमे विद्वान एवं मुनिमहाराज भी हैं, उनके मत से नारीयल पानी को हरी नहीं मानते परन्तु आचार्य श्री का कहना है, अभी इन्हें जीवकाण्ड आदि ग्रन्थों का अच्छे से अध्ययन करना चाहिए। गोम्मटसार कारक कहना है नारिकेल सचित्त होता है। उसके भीतर का पानी भी सचित्त ही है, जब तक उसका स्वाद आदि कुछ डालकर नहीं बदलते। आ. श्री ने इसे हरी में गिनने को कहा साथ ही इसमें विशेष मिनरल होने से ज्यादा लंबे समय तक नहीं लेना चाहिए।"

बागन खेड़ा
22-11-20 दया को याद करता यादव रविवार

- सभी तीर्थंकर राजपूत अर्थात राजाओं के पूत थे, क्षत्रियथे।
- जनता की सेवा करना, बदले में कुछ चाह नहीं रखना ये सभी का धर्म होता था।
- 22वें तीर्थंकर यदुवंशी थे उन्हें दया की याद थी तभी तो बारात बीच से ही गिरनार को चली गयी।
- जो दयालु होता है वही याद करता है वही यादव कहलाता है।
- यादव अपने साथ-साथ पशु-पक्षीयों का भी पालन करते हैं ये उनकी दया का ही परिणाम है।
- जिससे बुद्धि भ्रष्ट हो जाये, मन विकृत हो जाये ऐसे अण्डा-मांस-शराब इत्यादि को दूर से ही छोड़ देना चाहिए।
- ताजा-ताजा तरकारीयाँ एवं शुद्ध भोजन गाँव वालों को ही नसीब होता है।
- दयालु लोग जहाँ खेलते रहते हैं उसे खेड़ा कहते हैं।
- जीवों की रक्षा करना हमारा मुख्य कर्त्तव्य होना चाहिए। जीवों का संरक्षण है तभी तक यह धरती है, जिस दिन पशु-पक्षी समाप्त तो मानव भी नहीं रह पायेगा, पूरी धरती जल जायेगी।
- कम दाम में लेकर ये बनिया लोग अधिक दाम में बेचते हैं। गाँव का किसान जो पूरी मेहनत करता है उसे ही लाभ भी ज्यादा मिलना चाहिए।

०००

रात्रि - कन्नौद - 7 Km.

कन्नौद

23-11-20 नदी सम पवित्र, सागर सम विशाल सोमवार

- सिद्धोदय के प्रताप से आपको मांगने की आवश्यकता है ही नहीं। नदी बहकर स्वयं आपके दरवाजे तक आती है। आपको उसका स्वागत करना है।
- नर्मदा नदी के किनारे पर साधक साधना के स्थान बनाकर अपनी आत्मा को पवित्र करते रहते हैं। जिस प्रकार नदी कोई भी कूड़ा-कचरा नहीं रखती इसी तरह साधक भी आत्मा को पवित्र करता है।
- जैसे नदी का जल कल-कल बहता हुआ विशाल सागर का रूप धारण कर लेता है उसी तरह साधक भी साधना के बल से सागर सम विशाल बन जाता है।
- जैसे नर्मदा समुद्र का रूप धारण कर लेती है वैसे ही हमारी साधना हो ताकि संसार से दूर होने का लक्ष्य हमारा पूर्ण हो।
- करने योग्य जो कार्य है उसे करते जाओ।
- मांगते ही रहते हो, जो मिला है उसे क्यों भूल जाते हो।
- संसार के कार्य तो हम अनवरत कर रहे हैं, संसार-छेद का भी ध्यान रहे।
- विनति तो हम सुन लेते हैं, आमंत्रण-निमन्त्रण नहीं।
- धर्मध्यान की अपेक्षा श्रीफल चढ़ाकर बुलाना निमंत्रण नहीं, भावना रखते हैं ताकि धर्म ध्यान स्वयं भी कर सके।
- गृहस्थ को रुकने एवं रोकने में आनंद आता है पर साधु तो चलने एवं चलाने में आनंद मानते हैं।

० ० ०

रात्रि - एसार पेट्रोल पम्प
ननासा

खातेगांव

२५-११-२० भला विराजो जी मंगलवार

सभी महाराज जी का विहार उधर की ओर हो रहा है, हम विहार करते हुए इधर आ रहे हैं। अब अभी बोल रहे थे - "भला विराजो जी", विहार कर रहे हैं तो कहाँ विराजे? कहाँ विराजा? अरे विराजो। अढ़ाई में अरे ही विराजो? अच्छा है। आप लोगों का पुण्य जोर मार गया भगवान से अनुबन्ध हो गया।

प्रजन अब संक्षेप में की है तो हमारा भी इतना ही पर्याप्त है। आगे का कार्यक्रम क्या है? पहले बताया नहीं जाता। अपने-अपने इष्ट को याद करें, हम भी अपने इष्ट को याद करेंगे। कौन है - क्या है इष्ट ये तो सब जानते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय

संस्मरण

पुण्य होता है तो आचार्य श्री सामने वाले के घर पर स्वयं खींचे चले आते हैं। कन्नौद में आहार पर उठना था। जहाँ रोका था वहीं शादीघर में भक्ति भी पढ़ ली। आ० श्री ने कहा - मन्दिर से उठ जाते हैं, दर्शन भी हो जायेंगे। मन्दिर 200 मीटर था। चौके सभी यहीं लगे थे। किन्तु एक चौका बस्ती में लगा। प्रबल भावना थी, वह भी मन्दिर से 1 km. दूर। आ० श्री का पड़गाहन हो गया। एक मात्र चौका लगा था बस्ती में बाकी सब ने वहीं धर्मशाला के पास लगाये। ऐसा होता है पुण्य योग से पड़गाहन।

खातेगांव

25-11-20 "भाव पलटने से पासा पलटता" बुधवार

- अज्ञानदशा में बाहरी पदार्थ का ही मूल्य देखने में आता है, भीतरी पदार्थ का नहीं। जब कि भीतरी मूल्य ही मुख्य है शेष तो सब गौण है।
- बाहर का परिवर्तन भी भीतर पर ही आधारित होता है। इसलिए मुख्य पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।
- विश्वास मुख्य पर होता है - भीतर में होता है हाँ बाहरी क्रियायें उसी अनुरूप दिखती रहती हैं।
- "ऊपर वाला पासा फेंके - नीचे चलते दांव" इन पंक्तियों को मैं इस प्रकार परिवर्तन करके कहता हूँ - कोई स्वीकार करें या न करें। भीतर वाला पासा फेंके - बाहर चलते दांव"
- इससे भगवान को कर्तृत्व बुद्धि से भी ऊपर उठा देते हैं, वह किस - किस को देखेगा। वे तो आत्म केन्द्रित होते हैं।
- कोयला भी हीरा एवं हीरा भी कोयला, राजा, रंक बन जाता है तो रंक राजा बनते देर नहीं लगती, ये सब उसी भीतरी परिणाम / कर्मों की लीला है।
- भाव पलटा दो; पासा पलटने में देर नहीं लगेगी।
- न ही अभिमान करना, न ही दीन - हीन होना दोनों ही अज्ञान की दशा है।
- जैसे दिन में सूर्य को धूल ढक नहीं सकते उसी तरह भारत में भी कोरना के कारण ज्यादा असर नहीं हुआ। ये सब प्राचीन संस्कारों, आयुर्वेद, नियमित दिनचर्या से ही संभव हो पाया।

26-11-20 जड़ कर्मों की शक्ति जानों गुरुवार

- महापुराणकार ने तो नहीं कहा पर श्वेताम्बर में ऐसा मिलता है कि आदिनाथ भगवान ने बैलो पर मुसिका बांधने को कहा, उसी कर्मबंध से उन्हें 6 माहिने तक आहार नहीं मिला।
- कोरोना के कारण सभी मास्क लगाकर रखते हैं, शायद पूर्व में कभीन कभी किसी को अंतराय जरूर डाला होगा। जैसा करेंगे- वैसा ही फल मिलेगा।
- अपना ही बहीखाता है, पुराना खाते में जो है उसे हमें ही चुकाना है।
- अपनी गलती को जो मन वचन काय, कृत कारित अनुमोदना प्रत्यक्ष-परोक्ष से स्वीकार कर लेता है वह ऊपर की ओर उठता चला जाता है।
- कर्म भले ही जड़ है पर इतनी शक्ति है जो आपको भी जड़ जैसे बनाये हुये है।
- कर्म रूपी लोन लिया है तो चुकाना तो पड़ेगा ही। यहाँ डिफाल्टर व्यक्ति चल नहीं सकता।
- परिणाम बिगड़ते ही फल भी बुरे रूप में मिलता है, हीरा भी कोयला हो जाता है।
- लड़ना सीखो तो कर्मों से लड़ना सीखो, ऐसे ही आपस में क्या लड़ना?
- द्रव्य क्षेत्र काल भाव मिला है- इसका उपयोग कर लो। अर्थात् अवसर मिला उसे चूको नहीं, सिक्सर मारो, खेलो, जीवन तर जाये।

रात्रि - दुलवा ०००

नेमावर
सिद्धोदयक्षेत्र

27-11-20 अन्तिम परीक्षा शुक्रवार

0 चातुर्मास के बाद तीसरी बार ऐसा योग मिला जब सीधे पांव सिद्धोदय की ओर बढ़ आये – पहले 1999 में गोम्मटगिरी से, फिर 2015 में विदिशा से एवं अभी इंदौर से। यहाँ के श्रावकों का भी पुण्य है।

0 अबकी बार कुछ विशेष मानसिकता को लेकर आप सब यहाँ लाये हैं।

0 विशेष अवसर है कुछ विशेष पुण्य अर्जन करने का, इसलिए पीछे नहीं रहना है।

0 कार्य बड़ा है एवं कठीन भी परन्तु अनिवार्य प्रश्न को हल करते समय प्रतिभा सम्पन्न विद्यार्थी इधर-उधर नहीं देखा करते।

0 मात्र प्रश्न को हल करने की ओर ही ध्यान हो, तभी सफलता कदमों में आती है।

0 मांगलिक वातावरण हो तो मंगल ही मंगल होता है फिर आज तो यह प्रथम दिन है।

0 आप लोगों की भी परीक्षा है। परीक्षा ऐसी हो कि बार-बार न देना पड़े। एक इतिहास की रचना आप सब करने जा रहे हो।

0 हम भी अन्तिम परीक्षा की ही अब तैयारी कर रहे हैं। जिन्होंने वह परीक्षा दे दी उन्ही के चरणों में पहुँच गये है।

New Hike – "मोक्षमार्ग सो, जटिल तो है किन्तु, कुटिल नहीं"

000

24-11-20, संगत का असर शनिवार

- सूर्य के आताप का प्रताप है कि गंदा जल हो या गंगा जल दोनों आसमान में भाप बनकर एक से हो जाते हैं। इसी प्रकार धरती पर नदियों का जल मीठा होता है पर समुद्र की सोबत में जाते ही सम्पूर्ण जल खारा हो जाता है। इसलिए संगत सोच-समझकर करना चाहिए।
- संगत का ही प्रभाव है जो अच्छाई भी बुराई में बदल जाती है और बुराई भी अच्छाई में परिवर्तित हो जाती है।
- आसमान में है अधर में है तब तक शुद्ध जल माना जाता है. ज्यो ही धरती के सम्पर्क में आया जीवों की उत्पत्ति हो गयी। अब छानकर, संशोधित करके ही काम मे ले सकते हो। हमारी दशा भी लगभग इसी प्रकार की है। संसार दशा में अशुद्धता ही बनी हुयी है।
- जो निर्मल, उज्जवल, परिमल स्वच्छ हो चुके हैं उनकी शरण में जाना ही एक मात्र लक्ष्य है।
- ऐसा निर्मल जल बनें जो भगवान के चरणों में चढ़ जायें, दूसरों के गले में तो विकल्प ही हाथ लगेंगे।
- योग्यता हमारे पास है - जैसे फिटकरी (निर्मली) डालने से कादा - कियड़ नीचे बैठ जाता है वैसे ही प्रभु चरणों के समीप बैठने से कषाय भाव शामिल हो जाते हैं।
- हेय - उपादेय का ध्यान रखकर हम आगे बढ़ते जायें।

केशलोंच

29-11-20 माँगने की आदत रविवार

o काल अनंत चला गया, कब तक वर्ष आदि की गिनती गिनते रहोगे।

o शिखर जी जाने के बाद आने की तो कोई बात ही नहीं होती।

o मांगने से नहीं मिलता पर हम बिना मांगे रहते भी नहीं। हाँ भावों का प्रभाव तो पड़ता ही है। छोटे बच्चे को भी मांगने पर दूध मिलता है।

o भगवान को भी हमारी पूजा या निन्दा से कोई फर्क पड़ने वाला नहीं किन्तु उनकी भक्ति से हमारा तो संसारच्छेद हो ही जाता है।

o सबसे सस्ता है भक्ति करना - अनादि का मटमैला - कीचड़ भक्ति - स्तुति रूपी निर्मली से साफ हो जाता है।

o पंच परमेष्ठी को याद करना, अपनी आत्मा को ही ध्यान में लाना है।

o "न पुजयार्थ.......पुनातु चित्तं दुरिताञ्जनेभ्यः" स्वयम्भु स्तोत्र की बहुत ही मार्मिक पंक्तियाँ हैं। यहाँ पर पुनातु = आज्ञावाचक है, भगवान आपकी स्तुति हमारे पाप मल को धोये। अतः पुनाति (सामान्य वर्तमान) न कहकर गुरुजी पुनातु बोलते थे।

o सांसारिक अपेक्षा से प्रेरित पुण्य कर्म न हो संसारातीत जो है उनसे प्रेरित होकर कर्म करें।

o हे भगवन् आपको मतलब नहीं किन्तु हमें तो आपसे मतलब है।

ooo

30-11-20 अब तो आंखे खोलो सोमवार

- देव गति को इसलिए श्रेष्ठ माना क्यों कि वहां सम्यग्दर्शन की भूमिका एवं तीर्थंकरों जैसी विभूतियों के दर्शन अनायास ही प्राप्त हो जाते हैं। एक सेकेण्ड में पहुंच जाते हैं।
- जैसे यहां बड़े-बड़े सेठ साहूकारों के यहां नौकर के लिए अलग से कहने की आवश्यकता नहीं होती वैसे ही देव लोक में भी बड़े इन्द्रों के परिवार में अन्य सबको जाना ही होता है। वहां पहुंचकर जब अपने से बड़े देवता (Boss) को वीतराग की वंदना करते देखते हैं तब उनकी आंखे खुल जाती है ऐसे ही जिन महिम दर्शन बोलते हैं।
- संसार के वैभव से ही रोशनी न आये, संसार से पार होने के लिए भी आंखो में रोशनी चाहिए।
- सभी को स०द० की प्राप्ति हो ये कोई नियम नहीं है, क्यों कि मोह के राज्य में सब फंसे हैं, जो उस पर विजय पा लेते हैं, उन्हे फिर सब वैभव फिके लगने लग जाते हैं।
- जब समय मिले पंच परमेष्ठी की आराधना करते रहो, वही संस्कार कालान्तर में दृढ़ होकर काम आयेंगे।
- स०द० बिजली की भांति उत्पन्न होकर नष्ट भी हो जाता है।
- अब तो मोह रूपी मदिरा पीना बंद कर दो।

New Hiq. - यही है हित, अहित न हो कभी, परापर का
ooo

(गोलाकोट वाले आये)

1-12-20 घर में रहें - नारियल की तरह मंगलवार

- दो तरह के नारियल होते हैं, कच्चा एवं पक्का। कच्चे में पानी रहता है अभी परिपक्वता नहीं है। पक्के में अलग ही गंध-स्वाद आदि होता है उसका तेल भी निकाला जाता है। सबसे महत्त्वपूर्ण तो है वह भीतर रहकर भी चिपका नहीं रहता अलग ही रहता है। आप भी घर में रहें पर चिपक कर नहीं, नारियल की तरह।
- चेतन की शक्ति को भूलो मत। जड़ तत्त्व के साथ आप भी जड़ बन जाते हैं।
- घर में रहें मगर मैं भिन्न हूँ, ये सब भिन्न हैं। नरेही एवं गोला की भांति। मैं तेलदार हूँ, ये तेल से रहित हैं। फिर गोला में भी ऊपर की कालात्वचा चाकू से अलग करते हैं मतलब शरीर भी भिन्न है। भीतर तेल की सुगन्ध है।
- घी की अपेक्षा खोपरे का तेल मस्तिष्क को अधिक ताजगी पहुंचाता है।
- आप घर बसाकर के घर में बसे हुये हैं जब कि घर में रहकर भी घर बसाये थे कोई नियम नहीं। वह गोला कहता है कि ये बाहर वाले तो भिन्न हैं ही, मेरा शरीर भी मेरे से पृथक है।
- गोले के तेल में बाती लगाकर जलाने से वह स्व-पर दोनों को प्रकाशित करता है तथा हजारों दिपक और जल सकते हैं।

o o o

२-१२-२० संस्मरण- खरबूजा को देखकर.... बुधवार

○ जब छोटा था तब खेत पर जाता था। वहाँ पड़ोस में जो किसान थे उनके यहाँ तरह-तरह की बेल थी। ककड़ी, करेला, खरबूजा आदि की बेल। मैंने देखा- वह किसान एक खरबूजा को केन्द्र में रख चारों ओर बहुत से खरबूजे रख रहा है। मैंने पूछा- ऐसा क्यों कर रहे हो तब उसने कहा- इस बीचों बीच में रखे खरबूजे का रंग, गंध, स्वाद, स्पर्श आदि बदल गये, ~~अब~~ ये चारों ओर के खरबूजे भी इसकी तरह पक जायेंगे। बस वह बात आज भी याद रहती है कि मोक्षमार्ग में भी एक व्यक्ति आगे बढ़ जाता है तो अन्य लोग भी उसके पीछे-पीछे अनुकरण करने लगते हैं।

○ मुजफ्फरनगर वालों में एक ने दान लिखवाया, धीरे-धीरे अन्य खरबूजों में भी सुगंधी फूटने लगी।

○ परिवार का एक सदस्य मोक्षमार्ग में बढ़ता है तो अन्य संबंधी, अड़ोस-पड़ोस, विद्यालय, सम्पर्क में आने वाले भी प्रभावित हुये बिना नहीं रहते।

○ हमारी बात को बगार लगाकर के आगे सब तक पहुँचा देना। बगार मतलब होता है वह बिगड़ा हुआ भी स्वादिष्ट लगने लग जाता है।

○ जो व्यक्ति आगे बढ़ जाता है उससे स्व एवं पर दोनों का ही मूल्य बढ़ जाता है। इसलिए धार्मिक अनुष्ठान में सदैव आगे रहा करो। ○○○

3-12-20 धरती की महानता गुरुवार

o समय पर वर्षा एवं अनुपात से वर्षा होने पर ही धरती पर सुभिक्ष होता है।

o धरती मौलिक है- सोना नहीं क्यों कि धरती से ही सोना निकलता है। एक बीज हजारों गुना फल देता है। इसलिए धरती सोना उगलती है।

o इस अचल सम्पदा के सोने की परख तो करो।

o धरती सबका भार वहन करती है। इसी पर नदी-नाले, पहाड़, मैदान सब है। धरती न हो तो समुद्र भी नहीं होगा।

o सूर्य की तपन से जब धरती फट जाती है, वर्षा की बूंदों से वह धरती फूल जाती है, बीज को अंकुरित करने की क्षमता रखती है।

o वह आपको कितना देती है और आप उस पर अपना अधिकार जमाते हैं। जिसके लिए आपको नियुक्त किया वह वितरण न कर अपने ही हाथ में सब रख लेते हैं। धरती भी अपना हाथ खेंच लेती है। उदारता रखनी तभी सबको मिलेगा।

o वृक्ष को धरती का पूत (भूपूत) कहते हैं। आज वाहनों के कारण इसे भी काट रहे हैं। जो शुभजन पथिकानाम् खेदनोदे समर्थे... राही के राह में हमसफर होता है।

o धरती पर तीर्थंकर जैसी चैतन्य शक्ति भी जन्म लेती है।

o भगवान तेरहवें गुणस्थान में है और आप मेरे गुणस्थान में है

o o o

५-१२-२० आओ बदलो हाथ की रेखायें शुक्रवार

- आंसुओ से ही करुणा की अभिव्यक्ति मानना गलत है। प्रभु/गुरु, में अपार करुणा है पर आपके आंसु से उनकी आंख में भी आंसु हो, ऐसा नहीं।

जिस तरह मरीज की आँख मे पानी होने पर भी चिकित्सक की आँखो में पानी नहीं होता यदि पानी आये तो शल्य चिकित्सा हो ही नहीं सकती, इसी तरह भगवान कभी भी रोते नहीं, शोक से रहित होते हैं।

- भगवान शोकग्रस्त नहीं, हाँ जो शोकग्रस्त है, उन्हें अशोक बनाते हैं।
- अशोक वृक्ष एवं अशोक-चक्र मे अन्तर है। अशोक चक्र में बहुत से पहलु होने से आंखे घूमती रहती हैं जब कि वह अशोक चक्र स्थिर है जो स्थिर है वह शोकग्रस्त नहीं अशोक है।
- अपना कर्त्तव्य करो। कर्त्तव्य करना हमारा रिवाज, परम्परा, आम्नाय है। हमारे यहां ऐसा लाड़-प्यार नहीं किया जाता जिसमें कृपांक देकर पास कर दो।
- अंक के अभाव मे शून्य का महत्व ही क्या? अंक सम्यग्दर्शन है तो शून्य ज्ञान-चारित्र।
- कोरोना में छोटे बच्चों एवं वृद्धजनों को घर से बाहर जाने की सरकार की भी अनुमति नहीं है।
- हस्तरेखा को बदला भी जा सकता है। ललाट की रेखा (भाग्य, किस्मत) जीवन रेखा को भी कर्त्तव्य से बदल सकते हैं।
- आराम तो कर सकते है पर खुर्राटा नहीं ले सकते, सो नहीं सकते।

० ० ०

8-12-20 उपासना अहिंसा महादेवता की शनिवार

- जो भी समय का उपयोग हो रहा है वह अहिंसा महादेवता की उपासना में ही हो रहा है।
- अहिंसा महादेवता कुछ बोलती नहीं, जो गलत बोलता है उसकी जीभ पकड़ लेती है।
- सत्य सबको दिशा बोध दे देता है किन्तु पंचम काल की महिमा है जो उस सत्य को उद्घाटित करने में बहुत समय लगता है।
- रामायण में सीता की कथा से ~~सबको~~ पाठ मिल जाता है।
- अपने आत्मतत्व का ध्यान रखते हुये भी उसका प्रभाव अन्य (पर) पर पड़ता है। छाया की भांति।
- छाया में छाया नहीं पड़ती, प्रकाश में ही छाया पड़ती है। हाँ बड़ों की भी छाया पड़ती है। बड़ों की गवेषणा करें।
- बड़े प्रकाश में भी छोटे प्रकाश की छाया पड़ती है। इसे समझना भी अति आवश्यक है।
- घर में सत्य है तो बिना बोले भी ~~वह~~ उद्घाटित हो जाता है।
- धैर्य की बहुत आवश्यकता है, धैर्य का बांध पंचमकाल में टूटने जैसा हो जाता है।
- किसी की वजह से कर रहे हैं ऐसा नहीं है, अपने आत्म तत्त्व के लिए ही श्रम कर रहे हैं।

o o o

रविवार

6-12-20 दर्पण बोलता है रविवार

- अरिहन्त परमेष्ठी को पहले इसलिए रखा कि हमारा काम अरिहन्तों से ज्यादा पड़ता है, स्वार्थी है क्यों कि काम इन्ही से हो सकता है इसलिए सिद्ध बाद में अरिहन्त को पहले रखा।
- अरिहन्त प्रभु दर्पण की तरह है तथा सिद्ध परमेष्ठी काँच की तरह। दर्पण में प्रतिबिम्ब दिखता है जब की सिद्ध काँच में आर-पार। यदि चलना चाहते हो तो काँच की ही जरूरत है पर दर्पण के बिना चल नहीं पाओगे।
- आंखे न स्व को देख पाती है न पर को। आँखो के माध्यम से हम दर्पण में बिम्ब देख अच्छा जान सकते है।
- अरिहंत बोलते भी है इसलिए भी पहले रखा।
- सिद्ध परमेष्ठी देखने एवं दिखाने के योग्य नहीं है, केवल मानने के योग्य है, संवेदन के योग्य है। यह मात्र विश्वास से ही हो सकता है।
- जैसे नारियल विश्वास से खरीदते हो वैसे ही सिद्ध प्रभु पर भी विश्वास करके चलना प्रारम्भ कर दो।
- घण्टी चाहे सोने की हो या लोहे/तांबे की ध्वनि तो एक सी ही आयेगी। ध्वनि कभी दिखती नहीं-सुनाई पड़ती है।
- काँच में पारदर्शिता होती है, दर्पण में नहीं। साफ सुथरा काँच हो तो टकराना, अटकना-भटकना नहीं होता।

o मैं बोल रहा हूँ- ये आपके काम पहले आयेगा मेरे बाद में क्यों कि मैं पर के लिए बोल रहा हूँ। भीतर बोलने की आवश्यकता ही नहीं है।
o प्रथम भूमिका में दर्पण चाहिए फिर काँच से पार देखकर चलना प्रारम्भ कर दें। इसके उपरान्त न ही दर्पण एवं न ही काँच मात्र संवेदन की ओर ध्यान रहना चाहिए।
o चश्मा लगाते है- डर जाये, लाज हो जाये, नंबर बढ़ता जाये, आँखो की ज्योति ही चली जाये पर संवेदन में इन सबकी आवश्यकता नहीं। आंखे बंद करें या खोलें..... एक सा लगता है।
o आप लोग चश्मे में ही उलझ जाते है फिर उसी को ओढ़ लो तो कहना ही क्या?
o पारदर्शिता सदैव प्रमाणिकता मानी जाती है।
o दर्पण में पारदर्शिता नहीं- टकराहट है पर अरिहन्त प्रभु को देखते ही मालुम पड़ जाता है कि हमें क्या करना है। इसीलिए स्वाध्याय से जो प्रतीत नहीं होता है वह वीतराग मुद्रा के दर्शन से होता है। हाँ, स्वाध्याय से हमें मार्ग का पता चलता है।
o जब चश्मे का काम नहीं होता तो उसे सिर पर (यूं) चढ़ा देते है, बस आप भी आंखो से सीमित ही काम लेओ। तभी स्व का संवेदन होगा।

ooo

7-12-20 अपनाओ सिंह की प्रवृत्ति सोमवार

"शास्त्रों में उदाहरण मिलता है। इस जगत में दो प्राणी हैं दोनों संज्ञी पंचेन्द्रिय परन्तु दोनों की प्रवृत्ति में बहुत अन्तर है। एक सिंह है तो दूसरा श्वान। श्वान पर पत्थर फेंको वह पत्थर की ओर भागता है तब तक 2-4 पत्थर और पड़ जाते हैं किन्तु सिंह पत्थर किसने फेंका, कहाँ से आया? उस ओर देखता है। बस संसार में भी दो तरह के प्राणी रहते हैं एक नोकर्म का निमित्त मानता है तो दूसरा नोकर्म को लाने वाले कर्म को। कर्म की ओर दृष्टि दो।"

अनमोल-वचन

- कर्म कभी देखने में नहीं आते, पर उसके बिना कुछ होता भी नहीं।
- जब करना हो तब कर लेना आज-कल, दिन में-रात में इसी पर श्रद्धान करना है।
- इस परीक्षा में अच्छे-अच्छे फेल हो जाते हैं जैसे-प्रशासन की परीक्षा में - प्रवेश, लिखित फिर साक्षात्कार। पुनः जाँच भी नहीं करा सकते।
- श्रद्धान के साथ-साथ संवेदना में भी सफल होना है।
- अज्ञान एवं मोह के कारण संसारी प्राणी की स्थिति श्वान की भांति हो रखी है। सिंह की प्रवृत्ति अपनाओ
- धन्य है वे गुरु, जिन्होंने प्रश्न-पत्र लिख आत्मसाक्षात्कार में सफल हुये।

0 0 0

8-12-20 विकृति से प्रकृति की ओर मंगलवार

- समय से पहले फल चखने वाला बाद में केवल पछताता ही है।
- समय से पूर्व बनाया भोजन या तो ठण्डा (बासा) होगा या दुष्पच्य। दोनों ही शरीर के लिए नुकसानदायक है।
- कोरोना ने Fast Food के बिना भी जीना सीखा दिया, बल्कि अच्छे से स्वस्थ जीना सीखाया।
- मनुष्य को ही नहीं सेव, आम आदि फलों में भी कैंसर होता है।
- आचार्यों ने सूत्र दिया - "वर्तनापरिणामक्रियापरत्वापरत्वे च कालस्य" ये सब काल द्रव्य के उपकार हैं।
- हर द्रव्य (वस्तु) में प्रतिक्षण परिवर्तन हो रहा है, आप उसे रोक नहीं सकते चाहे फ्रिज में भी क्यों न रखें। जो जीवन को फ्रिज कर दे उसका नाम है फ्रिज।
- आज के युग को वही पसंद है जिसमें अहित है।
- समय से पहले भी नहीं एवं समय के बाद भी नहीं चाहिए चाहे गृहस्थ हो या श्रमण।
- फास्ट फूड नहीं - घास्ट फूड अपनाओ। वह स्वादिष्ट, ताकतवर, मर्यादित एवं सहज सुलभ होता है।
- सभी शहरों के भोजन की समीक्षा की गई किन्तु सभी ने दाल-भात को मुख्य आहार स्वीकारा। इसे खाने से उकताहट नहीं होती।

o व्यंजन कब तक, अब तो स्वर चाहिए।
o काव्य में भी बिना व्यंजन चल सकता है पर स्वर बिना नहीं, चला जा सकता।
o बिना स्वर के गर्दन हिल नहीं सकती।
o हमारे यहाँ मर्यादा का ध्यान रखा जाता है- श्रावक ऋतु अनुसार 3-5-7 दिन की मर्यादा पालता है। चक्की को साफ करके ही आटा आदि पीसता है ताकि उसकी मर्यादा बनी रहे। यह मर्यादा उसकी समीति कहलाती है।
o श्रावक मर्यादा को पालता है तभी मन-वचन-काय शुद्धि आहार-जल शुद्धि बोलता है।
o कोरोना ने खाना ही नहीं बैठना भी सीखा दिया। आप लोगों के लिए गोले बनाये हैं उसी में बैठें।
o समय से पहले नहीं, प्रतिक्षा करिये अन्यथा उसकी समीक्षा भी नहीं कर पाओगे।
o डाल से गिरा फल लेना शुक्ल लेश्या का प्रतिक है। वह समय पर ही पक कर गिरेगा।
o जीवन में हेय-उपादेय तथा ज्ञेय-ध्येय को समझें। ध्येय बनाकर जीवन में विवेक रखकर मर्यादा का पालन किया जाता है।
o काल से पहले किया विकृति में ही आयेगा वह संस्कृति अथवा प्रकृति नहीं है ये सार है आज का।

ooo

9-12-20 "नागरिक बनो - देश बनेगा" बुधवार

- ज्ञान मिला है उसका सदुपयोग करो दुरूपयोग नहीं, अन्यथा वह स्व एवं पर दोनों के लिए ही अहितकारक सिद्ध होगा।
- मंदाग्नि होना एवं भस्मक व्याधि होना दोनों में ही स्वस्थता नहीं है। समय पर भूख लगे एवं संतुलित आहार हो तभी स्वस्थ कहेंगे।
- बहुत जल्दी जवाब देना अच्छा नहीं माना जाता।
- जिस प्रकार वैद्य अतिभोजन की श्रद्धा होने पर और स्वादिष्ट भोजन दे देते हैं। धीरे-धीरे उससे अरुचि होना प्रारम्भ हो जाती है, ऐसे ही समन्तभद्र स्वामी के साथ हुआ। धीरे-धीरे भस्मक व्याधि शांत हुई और प्रायश्चित ग्रहण कर अच्छे ढंग से समाधी हुयी।
- सही ढंग से उपाय करने पर उपाय छूट जाते हैं।
- साता भी आकुलता पैदा करती है। ज्यादा पैसा होने पर भी नींद नहीं आती एवं कम होने पर भी नींद नहीं आती। संतुलित धन होना चाहिए।
- संतुलित धन अर्थात समय पर खर्च एवं समय पर आय नहीं होगी तो अनर्थ हो जाता है।
- लोकतंत्र के साथ लोकतंत्र की संहिता भी अच्छी बनी होती तो ये नौबत नहीं आती। (किसान आंदोलन पर)
- जीवन भले ही आपका है परन्तु उसका यद्वा-तद्वा उपयोग नहीं कर सकते।

o यद्धा - तद्धा उपयोग करने से न ही स्वयं का तथा दूसरों का तो भला हो ही नहीं पायेगा। इसलिए बुद्धि को मांजकर स्वपर के लिए उपयोग करो।
o साक्षरता अभियान द्वारा भले ही 95 प्रतिशत से अधिक साक्षर हो चुके परन्तु सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश महोदय कह रहे हैं कि खेद है हम साक्षर तो बना दिये, नागरिक एक भी नहीं बना पाये।
o ताली बजा रहे हैं, मतलब पढ़े-लिखे तो हो परन्तु नागरिक नहीं बन पाये।
o भोजन जिसने बनाया है उसने उदारता पूर्वक निमन्त्रण देकर बुलाया है किन्तु जब भोजन वितरण का समय आया तो आपस में लड़ने लगे, अभी भारत में ऐसा ही हो रहा है।
o सही को सही स्वीकार करने में हमें अभिमान को बीच में नहीं लाना चाहिए।
o समय का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए एवं कभी भी अपव्यय भी नहीं करना चाहिए।
o जब उन्नति का समय आ रहा है तो इस तरह की बीमारियाँ (अस्वस्थता), उसमें भी मानसिक बीमार नहीं होना चाहिए।
o जो व्यक्ति अपना काम करते हुये दूसरों के बारे में भी सोचता है वह व्यक्ति बहुत जल्दी महान् बनता है।

ooo

10-12-20 वीतरागता तैरती - राग डूबोता गुरुवार

"जिस प्रकार आसमान से गिरी एक बूंद जैसा निमित्त मिलता है वैसी हो जाती है, वह बर्फ का रूप बन ओला बन जाती है अथवा सीप के संबंध से मोती अथवा बांस के सम्पर्क में वंशलोचन (मुक्ता) अथवा ऊपर की ऊपर मेघमुक्ता बन जाती है उसी तरह से हमारा जीवन है भी जैसा निमित्त मिलता है वैसा बन जाता है। अहंकार मत करो।"

- पूरे बादल बरस जाये तो प्रलय आ जायेगा इसी तरह से आपका धन भी पूरा कभी नहीं खर्च होता, बूंद की तरह धीरे-धीरे आता रहता है।
- बूंद का अस्तित्व अनिश्चित है, धरती पर आते-आते कई परिवर्तन संभावित है।
- कहाँ तो बूंद रूप में जलकायिक और कहाँ मोती रूप में पृथ्वीकायिक! यह है निमित्त का प्रभाव। संसारी प्राणी की भी यही दशा है।
- जल की वर्षा से सुभिक्ष होता है और ओलावृष्टि से सब नाश हो जाता है।
- मैं ऐसा करूंगा-3 तो बोलता है मैं मरूंगा थे क्यों नहीं सोचता?
- कर्त्तव्य को समझने वाला कभी भी अहंकार नहीं करता।
- "मैं करके ही रहूंगा" ऐसा सोचना तो बिल्कुल गलत है। संभावना भावना रूप हो तो ठीक, अहंकार रूप न हो।

o सही पुरुषार्थ कर्त्तव्य की धारा को और लम्बा बनाता है जब की अहंकार उस धारा को वहीं की वहीं रख देता है।
o जैसा निमित्त मिल जाता है वैसी ही धारणा-भावना सामने आने लग जाती है।
o योग्यता के अनुसार परिणाम सामने आते हैं।
o प्रशासन की परीक्षा कई बार दी पर उत्तीर्ण नहीं हुआ, इस बार प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण किया। कर्त्तव्य मानकर करता जा रहा था। उत्तीर्ण होने पर स्वयं को भी विश्वास नहीं हो रहा।
ऐसे ही तीर्थंकर प्रकृति का बंध हो रहा है, स्वयं को पता नहीं किन्तु परिणाम जब आता है तब पता चल जाता है।
o अहंकार प्रत्येक क्षेत्र में घातक होता है, प्रत्येक कार्य पर पानी फेर देता है।
o किसी भी कार्य की परिपक्वता के लिए काल चाहिए और काल की कभी भी फोटोशॉपी नहीं होती।
o आपकी चाल के अनुसार काल चले ऐसा नहीं, काल के अनुसार आपकी चाल होना चाहिए।
o महापुरुषों के संकेत अनुसार चाल बने तो काल भी साथ हो जायेगा। पुलिस सुरक्षा भी करती है और गलत कार्य करने पर हथकड़ी भी पहनाती है।
o राग की उपासना से डूबोगे, वीतराग की उपासना से तैरोगे।

o संसार में राग ही डूबोता है, इसलिये राग से बचो, वीतराग के चरणों में आ जाओ।
o जैसी मति होती है वैसी ही गति होती है किन्तु अन्त-मता सो गता भी कहा है। अपनी मति को वीतरागता की ओर लाओ।
o आँख खोलो तो वीतराग की भक्ति करो एवं आँखे बंद करो तो ध्यान।
o ध्यान में आँखे खोलने की कोई जरूरत नहीं होती।
o आंखे बंद करो या खोलो दोनों में लाभ है।
o एक बंद एवं एक आँख खोलना चंचलता का प्रतीक है। स्थिरता से साथ भक्ति करो या ध्यान करो।

ooo

कुछ हटकर -
o आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने वस्तुओं का परिमाण न बनाकर इच्छाओं का परिमाण कहा जो ज्यादा व्यापक है।
o ज्ञानी जीव सदैव त्याग के पूर्व राग छोड़ने का प्रयास करता है।
o तव-मम भाव-मम इति संकल्प परिग्रह इसलिये थोड़ी-म्हारी से बचो।
o अध्यात्म का मार्ग बहुत सीधा एवं सरल है आचार्यों ने स्वयं चलकर हमारे लिए भी यह मार्ग दिया है।

11-12-20 "अब तो दूर हो राग रूपी चिपकन" शुक्रवार

"जिस प्रकार दो कागज हैं उनके बीच में गोंद है तो वे एक-दूसरे से चिपके हुए हैं। गोंद अकेला तो चिपक नहीं सकता, कागज भी कागज से नहीं चिपक सकता। बस यही स्थिति आत्मा की है जो कर्मों से चिपका है। राग-द्वेष रूपी गोंद जो लगा है रसायन विशेष से उसे अलग किया जा सकता है ऐसे ही कर्मों को भी अलग किया जा सकता है।"

"जिस प्रकार दीवार पर यदि चिकनाई (स्निग्धता) लगी हो तो थोड़ी धूल भी होगी चिपके बिना नहीं रहेगी। खूब धूल हो पर चिकनाई नहीं तो दीवार का कुछ नहीं होगा। यही राग रूपी स्निग्धता आत्मा से कर्मों की धूल को चिपका रही है। उस दीवाल की कालीख उतारकर एक-दो नहीं ज्यादा हाथ रँग चढ़ाने पर कालीख दिखना बंद हो जाता है।"

जिस प्रकार छोटे बच्चे को पहले दूध फिर धीरे-धीरे अनाज देते हैं, अपथ्य सेवन से इसे माँ बचाती है बस इसी प्रकार प्रारम्भिक अवस्था में अभ्यास करते समय बाहर के अपथ्य से बचो।

- जीवन में आज तक दीवाली मनायी ही नहीं गयी होली के सिवाय।
- जो रास्ता अभी अपना रखा है, उसे छोड़ने का नाम ही मोक्षमार्ग है।

- वस्तु ने आपको नहीं पकड़ा, आप वस्तु को पकड़कर चिपके हुये हैं। आप जाननहारा है, वस्तु नहीं।
- समयसार में लिखा है- वस्तु बंध का कारण नहीं, वस्तु को अपनाना बंध का कारण है।
- धूल सभी धूल से नहीं चिपकती, स्निग्धता के कारण एक-दूसरे से चिपक जाते हैं।
- राग-द्वेष रूपी चिकनाहट ही संसार का मुख्य कारण है।
- संसार का कारण क्या है उसका स्वभाव समझकर वर्त्तमान करते हुये युक्ति से उन कर्मों से बचने का उपक्रम करें।
- अपने आप पैर कभी अलग नहीं होंगे, उसमें बार-बार रसायन डालने पर ही पृथक होंगे। विपरीत तत्वों को डालने से तो और चिपकेगा, खुलेगा नहीं।
- अपनी-अपनी स्थिति एवं परिस्थिति है इसलिए दूसरों को मत देखो, अपने से शुरुआत करो।
- वस्तु जहाँ है वहीं रह आये उसे छोड़ना नहीं मात्र आपको वस्तु से मुँह को मोड़ना है।
- इन्द्रियों से बंध नहीं उनके व्यापार से बंध होता है।
- जैनागम में मुर्छा को परिग्रह कहा और इच्छा परिमाण व्रत एवं स्वदार संतोष व्रत कहा। महाव्रती के लिए मुर्छा हटाना है आपलोगों को इच्छा घटाना है। स्वदार संतोष व्रत में एक के सिवाय अनेक का त्याग हो जाता है।
- समझाओ नहीं, समझने का प्रयास करो। ○○□

12-12-20 स्वाधीन जीवन शनिवार

"जिस प्रकार मुर्गे को बाँग लगाने हेतु कोई घड़ी की आवश्यकता नहीं, समय पर उठता है समय पर सभी कार्य करता है, उसी प्रकार हमें भी प्रकृति के आश्रित रहना चाहिए, अप्राकृतिक जीवन शैली में यंत्रों के सहारे (घड़ी) जीने का अभ्यास हो जाता है।"

गुरु-वाणी

- विशेष श्रम करने के कारण अब थोड़ा विश्राम करने के लिए कह जाता है।
- मुर्गा किसी विद्यालय / विश्वविद्यालय में पढ़ने नहीं गया, न ही घड़ी बांधना सीखा है फिर भी समय पर उठना जानता है। संज्ञी पंचेन्द्रिय प्राणी है वह भी।
- द्रव्य-क्षेत्र, काल, भाव के अनुसार भिन्न-भिन्न परिणमन होता है।
- घड़ी में आपने अलार्म भरा, उतने ही बजे बजा फिर गुस्सा क्यों आता है? कर्म भी इसी प्रकार आपने बांधे अब उदय में आने पर रोना क्यों?
- कोरोना जैसा मित्र कोई मिल जाता है तब अपने आप ही मानने लग जाते हो - चरण छूना नहीं, दूरी भी है जरूरी।
- अब चाय नहीं काढ़ा पीते हैं लोग। Fast Food के बिना भी काम अच्छे से चल सकता है।
- "परस्परोपग्रहो जीवानाम्" कोरोना काल में चिकित्सकों ने अपनी जान की परवाह न करते हुये भी खूब सेवा कर पुण्य लूटा

०००

13-12-20 आओ लौट चलें.... प्रातः रविवार

"जिस प्रकार दिन में कितने भी बादल घने क्यों न छा जाये, घटाटोप भी हो जायें परन्तु रात जैसा अन्धकार कभी नहीं होता, न सूर्य का प्रकाश एवं प्रताप उतना तेज नहीं हो जितना गर्मियों में दोपहरी में। इसी प्रकार कर्म का आवरण कितना भी गहरा क्यों न हो वह आत्मा को जड़ नहीं बना सकता। इसलिए अपने भीतर की शक्ति को पहचानो।"

विद्या-वाणी

० कहने मात्र से दूर नहीं हो पाता, हाँ कहकर के हल्के हो जाते हैं।
आत्मा न हल्की है न ही भारी, उसके आभारी रहो।

० जो स्वभाव को देखता है वह सुखी है। स्वभाव को जो पा चुका है वह सुखी है। वहीं पर हम भी हैं और स्वभाव की ओर दृष्टि रखने वाला भी है। एक सुखी है किन्तु दूसरा सुखी।

० समता के साथ भोगने से आगामी बंधा कर्म तुलता है और आगे भी ऐसे संयोग, साधन/सामग्री मिलती है जो अनुकूल हो।

० संसार में प्रतिकूलतायें ही मिलती है। मोक्षमार्ग में तो उपसर्ग और परिषहों के बिना एक सेकेण्ड भी नहीं चल सकते।

- बड़ी वेदना के सामने छोटी वेदना व्यक्ति भूल जाता है जैसे सिर में दर्द है उसे जोर से कान को खेंचो अब कान के दर्द की तरफ ध्यान है सिरदर्द पर नहीं।
- मोक्षमार्ग में भी उपयोग को बदला जा सकता है।
- आपको ध्यान लगाना नहीं, बस ध्यान को परिवर्तन करना है। ये ही ध्यान का वैचित्र्य है।
- विदेश में कमा रहा है मतलब लड़का कब आ रहा है? वह माता-पिता को भी बुला लेता है - क्योंकि विदेश से ही प्यार है।
- आपका देश कौनसा है? सोचो। परिवर्तन होने वाला आपका देश नहीं।
- परदेश (विदेश) में सुख की सामग्री तो बहुत है पर आत्मीयता नहीं।
- आत्मीयता मिलने पर व्यक्ति हल्का हो जाता है, सोना-चांदी से हल्का नहीं, भारी हो जाता है।
- सूर्य में ताप-प्रताप दोनों रहते है कभी कम तो कभी ज्यादा।
- कोरोना ने सबको अंदर कर दिया। बालक भी कभी-कभी 10 माह तक भी गर्भ में रहता है लेकिन वह संकल्प करता है - अब पुनः नहीं आऊँगा किन्तु यहाँ आने पर सब भूल जाता है।
- स्वर्ग में बड़े-बड़े परिवार है पर आत्मीयता नहीं।
- हम बहुत दूर था ऊपर देख रहे हो। अब दूर से पहाड़ को... हरियाली दिखेगी पर है नहीं।

- भारत का आयुर्वेद ऐलोपैथी से बहुत आगे का है, अब विदेश भी मानने लगे।
- यहाँ उकाली मात्र नहीं, हर वनस्पती रोगों को ठीक-ठाक कर देती है चाहे - हल्दी हो या कालीमिर्च कोरोना भी सीधा हो गया।
- भारतीय संस्कृति में तो घासूक पानी, उपवास आदि से भी चिकित्सा होती है।
- बिना मात्रा के चल रहे हो। बिना मात्रा के तो काव्य में भी आनंद नहीं। सब कार्य मात्रा से हो।
- व्यंजन अकेले से वाक्य रचना नहीं स्वर आवश्यक है, इसी तरह व्यंजन मात्र से जीवन यापन नहीं, संतुलित आहार होना चाहिए।
- सारे विदेशी भारत की ओर देख रहें हैं, भारत कहाँ देख रहा है? उसे अपने भीतर देखने की जरूरत है, वहीं सब कुछ है।
- पागल के पिछे लोग लगते हैं, पागल कभी किसी के पीछे नहीं लगता अतः वही सही ज्ञानी है।
- दुर्दिन वो दिन है जिसमें आप सहधर्मी या आत्मधर्मी को भूल जाते हैं। ये दो ही धर्म है। कोरोना में ये दोनों याद रहे तो फिर दुर्दिन नहीं थे।
- भारत की मिट्टी को माथे से लगाते हैं, लोहतत्व इतना समृद्ध शल्य चिकित्सा के औजार उसीसे बने होते थे। इतिहास तो जानो।

- आज शल्य चिकित्सा मतलब ऑपरेशन अंग-काटना ही मानते है। आयुर्वेद में ऐसा है ही नहीं बहुत सारी पद्धतियों से शरीर की गांठ या अंग में जो विकृति आ गयी है उसे बाहर कर देते है। अंग ज्यों का त्यों बना रहता है। यह पद्धति केवल आयुर्वेद में ही है ऐलोपेथी में नहीं।
- वर्तमान चिकित्सा पद्धति एवं आयुर्वेद/भारतीय चिकित्सा पद्धति में बहुत अन्तर है।
- विश्राम को खरीद नहीं सकते हैं मोबाइल आदि को भूल जाओ तो विश्राम मिल सकता है।
- हमारे पास भी मोबाइल है परन्तु एक ही जगह काम करता है बस बड़े बाबा से बात करने में।
- जिससे भी सिर दर्द हो उसे भूलने का प्रयास करो।
- हमारे दिन एवं आपके दिन में बहुत अन्तर है। भले ही प्रकाश दिख नहीं रहा पर अंधकार तो नहीं।
- चश्मा लगाने से नहीं, आंखे बंद करने से भी स्पष्ट ध्यान में आने लगता है।
- टेंशन ठीक करना है तो इंटेंशन ठीक करलो फिर आपको मेडीटेशन की कोई जरूरत नहीं पड़ेगी।
- हमारे यहाँ तो हमेशा ही एक-दूसरे से दूरी बनाये रखते है, क्यों की घनिष्ठता होना रोग का प्रतीक है।
- ये ऐसा स्वर्ग है जहां गाड़ी से भी एवं पैदल भी आ सकते हैं।

ooo

१५-१२-२० तन मिला तुम तप करो सोमवार

जिस प्रकार मोर के पंख बहुत सुन्दर होते है, किन्तु जब वे ही पंख उसको उडने या चलने मे बाधा करते है तो वह उनका त्याग कर देता है इसी प्रकार यह शरीर बहुत अच्छा है परन्तु यदि भार स्वरूप हो जाये तो बुद्धिपूर्वक त्याग कर दिया जाता है इसी का नाम सल्लेखना है।

दूसरा उदाहरण है जैसे किसान धान आदि बोता है एक बीज का कई गुना कर लेता है उसी तरह यह शरीर मिला है, इसका उपयोग कर लो। उपयोग सही करेंगे तो भवसागर से पार भी हो सकते हैं।

विद्यावाणी

- जो उपकार करे वह उपकरण कहलाता है। उपकारम् करोति इति उपकरणम्"। यह शरीर उपकरण के हिसाब से मिला है सदुपयोग कर लो।
- देव, तिर्यञ्च, नारकी, भोगभूमी के मनुष्य भी इन सबको ऐसा उपकरण प्राप्त नही जैसा कर्मभूमी के मनुष्यों को मिला है।
- आज किसान बीज तो बोता है पर ऐसी खाद आदि डालता है जिससे जमीन ही बंजर हो जाती है। इस शरीर मे भी ऐसी ही खाद डाल रहे है, अब जाग जाओ इसमें अच्छी खाद (Past Food) डालो।

० खाना चाहिए लेकिन क्या खाना, कितना खाना, कब खाना, कैसे खाना ये बहुत महत्त्वपूर्ण है।
० अमीर लोग बहुत खा रहे हैं। क्या? दवाई।
० जो शरीर रूपी उपकरण मिला है उसका बुद्धिमता से उपयोग करो।
० भोगभूमि का मनुष्य भी दूसरे स्वर्ग तक ही जा सकता है लेकिन यहाँ का तिर्यञ्च भी 16वें स्वर्ग तक, तथा मुनिमहाराज मिथ्यात्व के साथ भी 16 तक जा सकते हैं।
० शरीर को आप वाहन के समान समझो। एक साथ ब्रेक लगा दिया तो जैसे गाड़ी पलट जाती है वैसे ही एक साथ नहीं कर सकते। आगे का ब्रेक नहीं लगाकर पीछे का ब्रेक लगाते हैं, वह भी समय पर तभी गाड़ी दुर्घटना से बचती है।
० शरीर रूपी विमान का सदुपयोग करो ताकि एक आध भव में ही बेड़ा पार हो जाये।
० खूब कमाओ इस शरीर से, ध्यान रखना वितरण करना भी महत्त्वपूर्ण है।
० मन विषयों की ओर न जाये, ये काया के प्रति मन का उपकार है।
० विषय सेवन करने वाले को प्रकाश भी है, चश्मा भी है, आँख भी है फिर भी कुछ नहीं दिखता।
० मयुर भी धन्य मानता होगा मुनिराज को पिच्छी का देकर।

ooo

15-12-20 बदलो दृष्टि - बदलेगी सृष्टि मंगलवार

"जिस प्रकार मानस सरोवर में मोती भी होते हैं तो मछलियाँ भी होती है। परमहंस मोतीयों को ग्रहण करता है तो बगुला उन मछलियों के पीछे पड़ा रहता है। ठीक इसी प्रकार इस संसार में भी रत्नत्रय रूपी मोती भी है और विषय-वासना रूप (पंचेन्द्रिय एवं मन) मछलियाँ भी। अज्ञानी विषय वासना में पड़कर अपने संसार को और बढ़ा लेता है जब की ज्ञानी परमहंस की भांति रत्नत्रय धारण कर संसार का नाश कर देता है।"

गुरु-वाणी

- मान का सरोवर नहीं, मानस सरोवर है। जो अभी चीन की सरहद में आता है।
- जो दृष्टि में होता है वही मिलता है, परमहंस की दृष्टि में मोती ही रहते हैं। आपकी दृष्टि यदि हार पर है तो हार ही मिलेगा।
- आजकल बनावटी (नकली) हार, आभूषण आदि बहुत चल पड़े हैं। अष्ट द्रव्य की थाली भी रत्न जैसे हैं पर रत्न नहीं।
- मोती की पहचान हंस ही कर सकता है। हंस-बगुला दोनों सफेद है पर कार्य दोनों के बिल्कुल विपरीत
- बाहर ही दृष्टि रहती है, आत्मदृष्टि से ही भीतर आ पायेंगे। जो आत्मा को भूल गया, उसकी शोभा भीतर

- प्यास का अर्थ है - इच्छा करना। इच्छा / उत्कण्ठा हो केवल धर्म की ही भावना हो। परमहंस वही करता है।
- राग द्वेष रूपी कल्लोल अर्थात तरंग को शांत करो। उन तरंगों को कम करोगे तभी निस्तरंग हो पाओगे और फिर अन्तरंग तो अपने आप झलक जायेगा।
- भावना भव नाशनी है। भव यानि संसार को पार करने में भावना नौका समान है।
- समोशरण मिलना बहुत विकट है, परन्तु कुछ लोग दूसरों के सहारे फोकट में ही चले जाते हैं, पर वे बाहरी चकाचौंध में ही अटक जाते हैं।
- दुनिया का आकर्षण छूटे तभी वास्तविक आकर्षण का लाभ मिलता है।
- सब जा रहे हैं, इसलिए यह भी भागा जा रहा है पर क्यों जा रहा इसे तो भूल ही बैठा है।
- गुफा में ध्यान इसलिए लगता है वहाँ बाहर का कुछ भी सुनाई ही नहीं देता। उन्हें गुफा में बोरियत नहीं होती, आड़े नहीं होते अपितु मोह को आड़े हाथ लेते हैं।
- आँखें बंद करने का मतलब बाहरी आकर्षण समाप्त हो गया।
- आँखों से फोटोग्राफी करो, भर लो, रात में आँखे बंद करके चालु कर दो सब कुछ दिखने लगेगा।
- ऐसी संगति करो जिससे आत्मोन्नति हो एवं ऐसे स्थान पर जाओ, जहाँ बार-बार जाने का मन करें।

o आज कोहरे में भी सभी अपने-अपने चहरे लेकर आये हैं।
o जब अति हो जाती है तो ठीक करने कोरोना जैसी महामारी आ जाती है। अब प्रासुक पानी पीने का लाभ समझ में आ गया।
o जो जीवन को फ्रीज कर दे उसका नाम फ्रीज है। अब Fridge (फ्रिज) को फ्रीज कर दें।
o जो सम्यग्दृष्टि है, निकटभव्य है सीधे इसी प्रधान पर आ जाते हैं। उन्हें पता है अन्यत्र इस प्रकार का माल मिलता ही नहीं।
o "भावना हो इच्छा नहीं।" संसार ताप विनाशनाय... ये भी भावना है। मुक्ति की इच्छा नहीं भावना होगी तो अवश्य मिलेगी।

o o o

शल्य-चिकित्सा

आयुर्वेद के माध्यम से भी शल्य चिकित्सा होती थी, हो सकती है। ये घोषणा होते ही, ऐलोपैथी डाक्टरों का विरोध होने लगा जब कि हजारों वर्ष पूर्व बिना चीर-फाड़ के कई तरह से बड़ी-बड़ी शल्य चिकित्सा होती है। 60-70 के आँकड़े भी इसके लिए उपयोग होते थे।
o उपवास से कैंसर की बिमारी भी ठीक हो सकती है।
o शिक्षा ऐसी हो जो सम्यग्ज्ञान के साथ आत्मतत्त्व (अध्यात्म) की ओर ले जाये। अपने आप को जो उपलब्ध नहीं कराये वह काहे की शिक्षा?।

16-12-20 सुनो तो समझो बुधवार

रेडियो में जैसे आकाशवाणी से प्रसारित किया जाता है उसमें एक बाल का भी अन्तर होने से रेड़ियो में आवाज सुनाई नहीं देगी। भारती नहीं विविध (तरह-तरह) भारती बोलती रहती है। वैसे ही मोक्षमार्ग में एक बाल का भी गड़बड़ (फर्क) होगा तो कहाँ के कहाँ पहुँच जाओगे पता ही नहीं चलेगा।

संस्मरण-1

एक बार एक डाक्टर आये, बेरी विदेश पद्धती थी। विदेश में दुध-पानी में कुछ भी मिलाकर तत्त्व के नाम पर खिला दिया जाता है। बच्ची धार्मिक होने से उसने मना कर दिया। बाद में वह कोर्ट में चली गयी और जीत प्राप्त की। आप कुछ भी खा लें ये ठीक नहीं। शाकाहारी हो तो विशेष ध्यान रखकर खाओ।

संस्मरण-2

50 वर्ष पूर्व हमारी आँखो के लिए चश्मा लगाने को बोला था, अंग्रेजी के डाक्टरों ने। हमने आज तक चश्मा नहीं लगाया और अच्छा दिखता है। बारीक अक्षर भी पढ़ लेता हुँ। कारण हमने ऐलोपेथी का सहारा नहीं लिया, आयुर्वेद में उल्लेखित प्रयोग किये। त्रिफला, नींबू, कपुर घी के साथ, सरसों तेल शुद्ध घी आदि ऐसी औषधीयाँ है जिनसे आज तक आँखे स्वस्थ है।

विद्या-सूत्र

- सुनाई तभी देगा जब स्टेशन सही लगेगा। थोड़ा भी गड़बड़ तो सुनाई नहीं देगा। बात बहुत गहरी है, पर हम सुन नहीं पा रहे क्यों कि बहरे हैं।
- भारत में रहकर यदि विदेशी शिक्षा, विदेशी भाषा का प्रयोग होगा तो वह उनके ही काम आयेगी, भारत के काम नहीं आयेगी।
- पढ़ाई का महत्व क्या? पढ़कर भी अपढ़ है। अच्छे-अच्छे इंजिनियर आते हैं, बताते हैं कि कम्पनी कार्य देती है पर पहले ट्रेनिंग करवाती है अर्थात जो भी पढ़ा है उसे अलग रख दो, हम जो करायें उस पर ध्यान दो।
- विदेश का ही तब बुद्ध तो संतान भी विदेश ही चली गयी, विशेष देश चला गया, विदेश चला गया।
- चीन का मुख्य भोजन है-मांसाहार वह भाँस किसी का भी हो, सर्प तक मारकर खाये जाते हैं। सबने स्वीकार किया - कोरोना का प्रबल कारण मांसाहार ही था।
- एलोपैथी में कोरोना का ईलाज नहीं आयुर्वेद में तो काढ़ा पीकर ठीक हो रहे हैं। एलोपैथी में डा० संक्रमित, आयुर्वेद में एक भी नहीं हुआ। वहाँ एक महिना यहाँ 7-8 दिन में ही घर जाओ। वहाँ लाखों का बिल यहाँ कम खर्च में स्वच्छ। एलोपैथी में दवा मरती है, आयुर्वेद में जितनी पुरानी आनी (अच्छी) आयु बढ़ती चली जाती है।
- आहार ही औषध है तथा उपवास-चिकित्सा आयुर्वेद के प्रमुख अंग हैं

ooo

17-12-20 पहचानो असली हीरे को गुरुवार

"असली एवं नकली की पहचान जिस प्रकार कठीन होती है किन्तु असली, असली ही होता है नकली की कोई किमत नहीं ऐसे ही धर्म की सही पहचान होना जरुरी है। हीरे की तरह हमें धर्म की सही पहचान करना है।" असली

गुरु वाणी

- सही ज्ञान को प्राप्त करें एवं जो योग्य पात्र है उसे सौंपकर जायें।
- संसार के अधिकतर लोग नकली को ही असली मान बैठते हैं। चमकने वाली हर चीज को सोना मानना उनकी भूल है।
- मक्खी भी हीरे को पहचानती है, वह मिश्री की डली पर बैठती है हीरे पर नहीं।
- हीरा सबको तोड़ देगा लेकिन स्वयं नहीं टूटेगा।
- चक्रवर्ती विवाह की प्रणाली बहुत अच्छी है किन्तु अपने आत्म तत्त्व को कभी न भूले।
- संसार में सब कुछ क्षणिक है, नाशवान है मात्र धर्म ही शाश्वत है, स्थायी है।
- जो दुर्गति से उठाकर ऊपर (सुगति) में धरदे वह धर्म कहलाता है।
- धर्म को परखना कठीन है उसे परखा नहीं मात्र अनुभव किया जा सकता है।

000

18-12-20 फार्मूला जहर उतारने का शुक्रवार

"जिस प्रकार सर्प के शरीर पर कांचली होने से दिखना बंद हो जाता है उसे छोड़ते ही जवान हो जाता है और दिखने लग जाता है पर भीतर का विष तो अभी नहीं छोड़ा जो मृत्यु का कारण है इसी प्रकार मनुष्य भी कांचली रूप चमड़ा तो छोड़ देता है या शरीर तो छूट जाता है पर भीतर का राग-द्वेष-मोह रूपी जहर नहीं छूटा जो भव-भव में भटकने का कारण है। शरीर के साथ कषाय को भी कृष (कम) करते चले जाना है तभी आत्म कल्याण (समाधी) कर सकते हैं।"

विद्या-वाणी

- ऐसा भी वैचित्र्य होता है कि सर्प डसे तो व्यक्ति नहीं मरता किन्तु वह सर्प ही मर जाता है क्यों कि उस व्यक्ति के भीतर इतना जहर भरा है।
- सर्प के डसने से वैद्य लोग चिकित्सा कर जहर उतार देते हैं, हलाहल की भी चिकित्सा कर बचाया जा सकता है किन्तु कषाय रूपी जहर से काटा गया कभी बचता नहीं। दूसरा यदि सर्प के जहर से मर भी गया तो एक ही भव गया परन्तु कषाय रूपी जहर तो उसे भव-भव में मारता है। इसलिये राग-द्वेष-मोह से बचो।
- ये स्वीकार करना पड़ेगा कि हम सर्प से भी ज्यादा विषैले हैं। हमारे भीतर भी जहर है।

- किसी व्यक्ति को देखने से हम प्रभावित नहीं होते किन्तु यदि अपना कोई आ जाता है तो हम तुरन्त ही मोहित हो जाते हैं।
- जिससे वैर होता है, देखते ही प्रतिशोध का भाव आता है मतलब प्रत्येक के पास दृष्टि-विष है। काट लिया तो फिर कहना ही क्या?
- आप जहर के साथ ही आये हैं। आत्मा की मृत्यु नहीं शरीर के कारण मृत्यु हो गयी, ऐसा कहा जाता है।
- जैसे सपेरा बीन बजाता है तो सर्प विष छोड़ देता है, ऐसे ही आप भी किसी बीन बजाने वाले को ढूंढ लें ताकि विष बाहर हो जायें। (आप ही तो हैं)
- पार्श्वनाथ भगवान के फणा पर सर्प रहता है, वही संदेश दे रहा है। उसने जहर को उगाल दिया और प्रभु की शरण स्वीकार कर ली।
- ऐसे वैद्य को पकड़ो जो दूसरे जीवन के लिए भी अमृत दे सके अर्थात् अमृतस्रावी ऋद्धिधारी हो।
- आत्मा पर इस तरह के संस्कार डाले तभी कर्मों पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

० ० ०

- अपने इतिहास, अपनी संस्कृति, अपनी कुबत, अपने कर्तव्य को कभी लचकदार (डांवाडोल) न बनायें जैसे भारत का संविधान लचकदार बना दिया तो आज भारत के सामने अनेक समस्यायें उत्पन्न हो रही हैं।"

19-12-20 कर्मों का खेल शनिवार

"कर्म पर विश्वास रखो, जो बांधा है वह भोगना ही पड़ता है। उदाहरण दिया श्री कृष्ण का। तीन खण्ड के आधिपति होने पर भी जिनके एक तीर से लोग थर-थर कांपते थे पुण्य क्षीण होने पर द्वारिका जली एवं श्री कृष्ण भी एक ही तीर से मृत्यु को प्राप्त हो गये।"

जिस प्रकार उपवास से पूर्व धारणा बनाना जरूरी होता है उसी प्रकार अपने विश्वास, अपनी आस्था को दृढ़ करना अति आवश्यक है। अपनी संस्कृति, अपने इतिहास के प्रति धारणा मजबूत होगी तो किसी दूसरे राष्ट्र से सलाह लेनी की जरूरत ही नहीं होगी।

विद्या-वाणी

० कर्म जब उदय में आते हैं तभी उसके स्वभाव को पहचानते हैं एवं आगे वैसा न करने का संकल्प लेते हैं।

० देव-शास्त्र-गुरु का सान्निध्य सब पाना चाहते हैं, पर कर्म में लिखा हो तभी मिलता है।

० कर्मोंका खेल बड़ा विचित्र है। रोने से कर्म हल्के हो जायेंगे यह मान्यता ही गलत है। नवीन कर्म का बंध और हो जायेगा।

० अपनी आस्था को मजबूत बनायेंगे, तभी जो शक्ति है उसका पूर्ण उपयोग हो पायेगा।

० तीन बातें हैं - उपयोग, दुरुपयोग एवं सदुपयोग। युंही समय निकाल देना उपयोग, विपरीत करना दुरुपयोग

एवं सही कार्यों/अच्छे कार्य करना सदुपयोग है।
0 एक-एक कदम रखना अणुव्रत है, एक साथ पूर्ण करना महाव्रत है।
0 जो क्रम (लाइन) में ही न लगे उसकी बात नहीं सुननी चाहिए।
0 जो ककहरा भी नहीं जाने ऐसे विदेश से भारत को सलाह नहीं लेनी चाहिए।
0 सलाह लें तो अपने ही इतिहास अपनी ही संस्कृति से सलाह लें। 0 मजबूरी में नहीं मंजूरी में धर्म हो।
0 दूसरे का चश्मा लगाकर नहीं देख सकते, भले ही नं० एक से ही हो, इसी तरह भारत को भी अपने ही चश्मे से देखना चाहिए।
0 अपने पर भरोसा रखो, आज दूसरों पर प्रयोग करके दवाई बना रहे हैं, यह पद्धति ही गलत है।
0 दुकानदार एवं ग्राहक दोनों ही एक-दूसरे पर भरोसा रखते हैं फिर भी परीक्षा करते रहते हैं। ग्राहक श्रीफल बजाकर देखता है तो दुकानदार कलदार को उछालकर, धोती पर रगड़ कर (चांदी-शीशम कितना?) देखता है।
0 आँखों से ज्ञान हो तो यंत्र ज्ञान की आवश्यकता ही नहीं।
0 कोरोना में काम-धंधा ठप्प हो गया किन्तु यह भी ज्ञात हो गया कि बिना काम के भी चल सकता है।
0 शरीर के बिना कोई काम नहीं, अतः समय पर शुद्ध भोजन एवं आहार को ही औषध बनाकर लें।
0 उपवास के बाद पारणा में संयम की जरूरत है। उपवास करना तो सरल है पर तोड़ना कठिन।
0 0 0

प्रातः
20-12-20 "कर्त्तव्य बुद्धि रखो" रविवार

"एक व्यक्ति खिचड़ी पका रहा है - पूछा, क्या कर रहे हो? जवाब दिया खिचड़ी बना रहा हूँ। थोड़ी देर बाद दूसरे ने पूछा क्या कर रहे हो, जवाब मिला - खिचड़ी बन रही है मैं देख रहा हूँ। बस जीवन में इन दोनों जवाब को अपनाले जीवन लाजवाब बन जायेगा। प्रथम भूमिका में करने की बात होती है दूसरी भूमिका में मात्र ज्ञाता-दृष्टा बनना है, करने की बात नहीं होती।"

गुरु - वाणी

- मैं करके ही रहुंगा ये अहंकार कभी मत आने दो। हमें कार्य करना है, उसमें उपादान होगा तो अवश्य होगा। कंकड़ पत्थर की खिचड़ी नहीं बन सकती, सिजने योग्य जो है उसी से खिचड़ी बन सकती है।
- व्यवहार भी छोड़ने योग्य नहीं एवं निश्चय भी छोड़ने योग्य नहीं, बस: महत्वपूर्ण है संयोजना। कब व्यवहार को अपनाना है एवं कब निश्चय की भूमिका होती है, इस रहस्य को जाने बिना मोक्षमार्ग नहीं बन सकता।
- प्रथम चरण में बुद्धिपूर्वक राग को छोड़ा जाता है, व्रत-संयम को ग्रहण किया जाता है, निमित्त जुटाये जाते हैं फिर आग लगाकर छोड़ दिया - समय पर खिचड़ी बनकर तैयार होती है।
- कर्मों पर आस्था रखने वाला ही निमित्त - उपादान को स्वीकार कर सकता है।
- कर्तृत्व बुद्धि से बचकर कर्त्तव्य बुद्धि रखो।

□ ○ □

21-12-20 "अतिथी संविभाग-धन के करो सही भाग" सोमवार

"जिस प्रकार किसान बैल को खिलाता-पिलाता है, समय पर जितना काम लेना है लेता है, शेष समय उनके कंधो पर से हल हटा देता है, बैल भी जुगाली में लग जाते हैं, उसी प्रकार अर्थ की व्यवस्था करनी चाहिए। जितना काम का है स्वं शेष को अतिथी संविभाग में लगा दें ताकि दूसरे के भी उपयोग आ सके।"

"जिस प्रकार पुराने चावल में स्वाद, गंध आदि बढ़िया होते हैं, चुरते भी जल्दी है। नये चावल में वैसा स्वाद-गंध नहीं, बनने में तो समय लगता ही है उसी प्रकार नये धन का उतना प्रभाव नहीं जितना पुराने धन का पड़ता है। उसी में से अतिथी संविभाग कर कुछ हिस्सा बाहर निकालो जिससे अन्य के काम आ सके।"

"जिस प्रकार एक विद्यार्थी अभावों में पढ़ता है, दीपस्तम्भ में अध्ययन कर परीक्षा देता है। दूसरा महलों में रहकर अच्छे प्रकाश आदि में पढ़ता है। जब परिणाम आया तो दोनों प्रतिभासम्पन्न होने से अंक समान लाये किन्तु हम उसके अंक ज्यादा मानेंगे जिसने मेहनत करके अभाव में भी पढ़ाई की, ऐशोआराम वाला उसके जितना प्रशंसा के योग्य नहीं है।"

"एक तो चक्रवर्ती ने दान दिया, दूसरा किसी गरीब ने दान दिया तो, गरीब के यहाँ रत्नवृष्टि होती है। चक्रवर्ती के पास तो भण्डार है ही।"

विद्या-सूत्र

- मुद्रा यदि आपके पास है तो आपकी मुद्रा भी खिली रहती है मुद्रा का अवमूल्यन होते ही चहरा (मुद्रा) कुम्हला जाती है।
- मुद्रा एवं मुद्रा के मूल्य जो अन्तर है उसे समझो। महत्व पूर्ण मुद्रा नहीं मुद्रा का मूल्य है।
- कमाई का कुछ भाग अतिथी- संविभाग हेतु अवश्य निकालें। ये तभी संभव है जब कहाँ - कितना - खर्च करना इसका विभाग कर लेता है।
- जिसके पास कम है वह थोड़ा भी देता है इसका महत्त्व ज्यादा है उन बड़े-बड़े सेठ साहुकारों के दानों से।
- क्षेत्रों पर दान देते है उसी से यात्रियों का धर्म-ध्यान निरन्तर होता रहता है।
- अर्थ विनिमय से ज्यादा वस्तु विनिमय का महत्त्व है। आज लोग इसे भूल गये है।
- घर में विवाह होना है तो आप कहते है - दुकान अच्छी चल रही है। जैसे ही मध्याह्न में दान मांगने आते है उनसे कहते है क्या करें आजकल दुकान नहीं चल रही। ये ही दो प्रकार की प्रवृत्ति है।
- भाव लबालब है तो कुयें की तरह पानी लबालब अन्यथा सूखते देर नहीं लगेगी।
- भाव सुरक्षित तो मुक्ति जाने तक सुखसुविधा मिलेगी। ० ० ०

आजकानयाहायकू - "मूल गुण तो, इन्द्रियजय न कि, मनोविजय"

22-12-20 कषाय रूपी अग्नि से बचें मंगलवार

"जिस प्रकार हाईटेंशन लाइन में विद्युत प्रवाह चल रहा है, उससे दूर ही रहते हैं कोई खतरा नहीं होता, जिस प्रकार ईंधन को अग्नि से दूर ही रखते हैं तो अग्नि बुझ जाती है, जिस प्रकार विस्फोटक सामग्री से अगरबाती को दूर ही रखते हैं उसी प्रकार इस आत्मा को कषाय रूपी अग्नि से बचाकर रखते हैं ताकि परिणामों में विस्फोट न हो।"

विद्या - वाणी

- भीम महाबलशाली थे। अच्छे-अच्छे योद्धा/राक्षस भी टिक नहीं पाते थे पर दृष्टि बदल देने से भयंकर उपसर्ग में भी टस से मस नहीं हुये। पंक्तियाँ सार्थक कही गयी - गये राज तज पाण्डव वन को अग्नि लगी तन में....
- भारत को महाभारत बनाने में पांच पाण्डवों का ही हाथ था। जैसे हाथ में पांच ऊँगलियाँ होती हैं वैसे ही ये पाँच पाण्डव थे।
- काया में शक्ति होते हुये भी प्रतिकार का भाव नहीं आना ही सही मोक्षमार्ग है।
- जो कुछ भी सामने आये उसे स्वीकार करना ही एक मात्र जीवन का लक्ष्य हो।
- मोक्षमार्ग न सीधा है, न टेढ़ा है इसमें तो मात्र अपने आप को सीधा बनाना है।

- सबके पास विस्फोटक सामग्री भरी हुयी है, किसी ने यदि अगरबत्ती लगा दी तो तुरंत विस्फोट हो जाता है।
- बाहर यदि अगरबत्ती से दूर रखते हैं तो भीतर ही भीतर जो विस्फोटक सामग्री है उसमें ऐसा विस्फोट होता है कि अनंतकाल से जो कुछ था सब राख हो जाता है।
- क्रोध हो रहा है तो उतना भयानक नहीं, पर क्रोध करते हैं तो ठीक नहीं।
- क्रोध को आग मत लगाओ। आ रहा है-जा रहा है इससे उतना नुकसान है नहीं।
- ईंधन के बिना कभी भी अग्नि के दर्शन नहीं हो सकते।
- जैसे दूध गरम ही पीया जाता है पर गरम को छूते नहीं। लकड़ी के हेण्डल से पकड़कर डालते हो रसोई तरह अग्नि से काम लेओ, अग्नि को पीना नहीं है।
- आप दीवाली पर पटाखे फोड़ते हैं, भगवान महावीर स्वामी ने भी पटाखे फोड़े, ऐसा विस्फोट किया कि भीतर के सारे कर्म ही नष्ट हो गये।
- विस्फोट सामग्री के पास होने पर भी विस्फोटन हो ऐसी वृत्ति का नाम ही मोक्षमार्ग है।
- मोक्षमार्ग तभी शुरु होता है जब मोहमार्ग पर प्रहार हो। ~~मन~~ मन कमजोर तो घर वाले अनुमति भी दें तो भी काम नहीं होगा।
- शरीर में कहीं भी थोड़ा सा गरम लग जाये तो चटका लग जाता है पर जीव्हा पर गरम सहन होता है, क्यों

कि जीव्हा अभ्यस्त हो गयी है। इसी तरह कषायों की जलन से भी शांत होना सीखें।

○ जीव्हा में अपार क्षमता होती है। ऊँगली जल जाये तुरंत मुंह में डालते हैं अच्छा लगता है। गाय भी बछड़े को चाटकर स्वस्थ कर देती है।

○ कोरोना कुछ देशों में पुनः दूसरे रूप में आ रहा है अतः असावधानी न रहें। भारत में कम हो गया इसका अभिमान भी न करें। इंग्लैण्ड आदि में पुनः लॉकडाउन हो गया। हल्दीघाटी का प्रसंग पढ़ा था। जीत हो ही गयी, एक रात ही बीच में थी। रात में सबने नशा कर लिया। परचक्र ने विजय पट्टा को हरा कर फिर से कब्जा कर लिया। इसलिए अभिमान न करना।

□ जो शुरवीर है वह विजय प्राप्त करता है पर उन शुरवीरों ने तो नशे पर विजय प्राप्त कर ली थी।

○ ○○

प्रातः प्रतिमा-1

२३-१२-२० स्वरूप प्रथम प्रतिमा का बुधवार

- जैसे समुद्र मे ज्वार-भाटा आता है वैसे ही यदि उत्साह हो तो आपलोगो को इतनी सर्दी मे भी नेमावर आने का भाव हुआ।
- उत्साह होने पर सर्दी-गर्मी भूख-प्यास सब गायब हो जाता है एक श्रमण की तरह।
- पुण्य का उपयोग विषय-कषाय में करने पर कभी भी आनन्द नहीं मिल सकता
- पुण्य कभी नष्ट नहीं किया जाता। पुण्य के उदय में पुण्य कार्य करने पर पाप की निर्जरा एवं पुण्य और बढ़ता जाता है।
- पुण्य की वृद्धि विषय-कषाय से नहीं विषयातीत होने से होती है।
- गुरुजी (ज्ञानसागर जी महाराज) ने वृद्धावस्था में अथक परिश्रम करके हमें रास्ता दिखाया। उसी का परिणाम आज भारतवर्ष के हर कोने मे त्यागी-व्रती-तपस्वीयों के दर्शन होते हैं।
- गुरुजी कहते थे दुर्लभ वस्तु का संग्रह नहीं करना, उसका उपयोग जन-जन तक होना चाहिए।
- इस संयम को लेने हेतु देव लोग भी तरसते हैं किन्तु ले नहीं सकते मात्र ताण्डव नृत्य कर सकते हैं।
- साधना एवं आराधना पंच परमेष्ठी की करते रहें ये सभी की भावना रहती है।

० वृद्धावस्था तो आना ही है किन्तु ज्ञानवृद्ध एवं तपोवृद्ध हों तभी वयोवृद्ध की सार्थकता है।

० दसवीं प्रतिमा तक घर पर रहकर साधना की जा सकती है। आज सात प्रतिमा से आगे कम ही लेते हैं। हमने ८-९-१० प्रतिमा हेतु ही मन में विचार किया, ताकि सभी इस ओर बढ़ें।

० यह प्रतिमा - विज्ञान श्रमण बनने का मार्ग प्रशस्त करता है किन्तु विवेक के बिना निर्जरा नहीं अर्थात जो होना है वह नहीं हो पाती।

० बिना आस्था के कुछ नहीं किन्तु आस्था मात्र होनेसे भी उतनी निर्जरा नहीं होती।

० एक महीने में जितनी निर्जरा उतनी व्रतों को लेते ही एक दिन में भी कर सकता है।

० गृहस्थ में भी कर्म निर्जरा हो सकती है, इसके लिए पहले मोह छोड़ना होगा, चाबी देना होगा।

० जैसे आप यहाँ बैठे-बैठे विदेश से व्यापार कर सकते हैं उसी प्रकार यहाँ बैठे-बैठे कर्म निर्जरा, बस अपने मोबाइल का सम्बन्ध आचार्य कुन्दकुन्द से जोड़ना है। पंचपरमेष्ठी से जोड़ना है।

० जैसे दर्पण में आप देखते हैं वैसे ही प्रातःकाल उठते ही दोनों हाथ की हथेली बना उसको देखते हैं। क्यों? दर्पण को देखने से हमें अपना चेहरा नहीं दिखेगा, चेहरा देखने पर दर्पण गौण हो जाता है इसी तरह प्रभु को देखने से हमें अपने

भीतर के कषायानुरंजित भाव देखने को आते हैं। हम उसे दूर करने का प्रयास करते हैं।

- प्रथम प्रतिमा को दर्पण की उपमा दी है।
- दर्पण को नहीं पोंछना है, दर्पण देखकर अपना मुख पोंछना है।
- संसार-शरीर-भोगों से निवृत्ति का रास्ता स्पष्ट दिखने लगता है प्रथम प्रतिमाधारी को।
- जिस प्रकार कांटा लग जाये तो निकालने हेतु आजु-बाजु में खोदते हैं, घासलेट तेल डालते हैं, दोनों अंगुली से दबाते हैं तो वह ऊपर आ जाता है। यदि मोहनीय कर्म रूपी कांटे को ढीला करना है तो अपनी कषाय को कम करना होगा।
- जो गांठ पड़ी है उसे नाखुन से खोलना तो प्रारम्भ करो, ढीली जरूर होगी।
- सम्यक्त्व के साथ सम्यक्त्वाचरण चारित्र की व्याप्ति है। सम्यक्त्व हो एवं सम्यक्त्वाचरण चारित्र न हो ऐसा हो नहीं सकता। जैसे कली खिले और सुगन्धी न हो ऐसा होते क्या
- आज ऐसा स्वाध्याय कर रहे हैं जिससे अर्थ का ही अनर्थ हो रहा है। धारणा गलत बना बैठे हैं उन्हें आचार्य कुन्दकुन्द को अभी फिर से अध्ययन की आवश्यकता है।
- अनंत संसार को चुल्लु भर कर देता है उसी सम्यक्त्वाचरण चारित्र से।

o आचार्य कुन्दकुन्द गृहस्थ आश्रम में सम्यक्त्वाचरण चारित्र माना है।

o सम्यग्दृष्टि कभी विकलांग नहीं हो सकता। सभी अंगों का पालन होना अनिवार्य है। उसमें भी बुद्धि का होना पहले अनिवार्य है।

o अब जाग जाओ। अपनी दुकान को संभालो। कह दो अड़ोस-पड़ोस को भी कह दो हमारे आंगन में नहीं आना। कुछ दिनों में आपही की दुकान रहेगी क्यों कि उस दुकान पर माल है ही नहीं। जैसे चीन की तरह- प्लास्टिक है ही चावल है।

प्रतिभा विज्ञान-2

23-12-20 जो मिला उसका उपयोग करो मध्याह्न

o अक्षरश्रुतज्ञान की सम्यक्दर्शन के साथ व्याप्ति है ही नहीं।

o एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः की टीका करते हुये राजवार्तिक में अकलंक देव ने कहा मतिज्ञान अकेला भी हो सकता है। श्रुतज्ञान साथ ही रहता है ऐसा है ही नहीं। ऐसा षट्खण्डागम में भी आया है।

o मैंने मार्ग बनाया तो मैं ही पहले चलूंगा ऐसा अहंकार मत पालना। युग के आदि में वृषभनाथ तीर्थंकर ने धर्म का प्रवर्तन किया पर वे यहीं पर थे तभी बाहुबली सर्वप्रथम मुक्त हो गये थे।

o दर्पण हेय-उपादेय का काम करता है। कहाँ-कहाँ कर्म रूपी कालिमा है ये हमें वीतराग प्रभु रूपी दर्पण देखने पर ही ज्ञात होता है।

○ शब्दार्थ, नयार्थ, मतार्थ, आगमार्थ इन चार के बाद भावार्थ आता है, आज पहले भावार्थ दे रहे हैं यह आगम का अपलाभ है।

○ जिस प्रकार बालभानु को सब देखना पसन्द करते हैं, मध्याह्न का सूर्य हो तो एक सेकेण्ड भी देखने में सक्षम नहीं हो पाते, इसी तरह दूसरे के दोषों में हमें मौन रहना है। दोष ढांकना है उस तरफ नजर जाये ही नहीं दोपहर के सूर्य की तरह तुरन्त उस ओर से नजर हटाओ।

○ गुणों का संचय करना बहुत ही सस्ता है, बस दोष पर से दृष्टि हटा लो।

○ गुरुजी ने कहा- परस्परोपग्रहो जीवानाम् = शिष्य गुरु की आज्ञा पालन कर उन पर उपकार करता है। भगवान महावीर से यहाँ तक यह परम्परा निरन्तर चली आ रही है।

○ व्रती बनते ही आपका संबंध तीर्थंकरों से जुड़ जाता है।

○ विदेश की अर्थनीति है और परमार्थ नीति मात्र भारत में ही उपलब्ध होती है।

○ आप सब भारतीय हैं तो भार उठाना है। (धर्म रथका)

○ आपकी नसैनी में चढ़ने के पायदान 7 ही हैं क्या? इसीलिए 7 प्रतिमा से आगे लेना नहीं चाहते। घर पर रहकर 8-9-10 प्रतिमा का पालन किया जा सकता है।

○ जैसे गन्ने में ऊपर-ऊपर मीठापन अधिक होता है वैसे ही प्रतिमा बढ़ाने पर (ऊपर-ऊपर) कर्मों की निर्जरा विशेष होती है।

○ ○ ○

प्रतिमा-विज्ञान-3, प्रातः

२५-१२-२० स्वतंत्र रहे पर स्वच्छंद न हो गुरुवार

"जैसे मोदी जी (सरकार) ने कोरोना के लिए कहा, इसकी औषध नहीं हैं। परन्तु दो बातें हैं एक तो दूरी बनाकर रखें एवं दूसरा मुंह पट्टी (मास्क) लगाकर रखें, बस जो आगम विरुद्ध कथन करते हैं उनसे दूरी बनाकर रखें, उनकी आगम विरुद्ध बातों को सुने ही नहीं। अपने घर का आगम मत चलाओ।"

विद्या-सूत्र

0 चतुर्थ गुणस्थान में चारित्र का लेशमात्र भी नहीं, वह जो सम्यक्त्वाचरण चारित्र कहा वह चारित्र के पूर्व की भूमिका है। आगम में दो ही प्रकार का चारित्र कहा है- संयमासंयम एवं संयम

0 सम्यग्दर्शन, चतुर्थ गुणस्थान में वह दर्शन संबंधी उपशम, क्षय, क्षायोपशमिक है चारित्र संबंधी नहीं, इसे नोट कर लें। अंश रूप भी चारित्र चतुर्थ गुणस्थान में नहीं होता।

0 संयमासंयम को औदयिक मानना आगम का अनादर है, हाँ असंयम भाव को हम औदयिक मान सकते हैं पर संयमासंयम तो औदयिक नहीं क्षायोपशमिक भाव है।

0 हम ही स्वाध्यायशील हैं। ये कहकर जनता को गुमराह कर रहे हैं। स्वतंत्र लोकतंत्र में स्वतंत्र न रहकर स्वच्छंद हो रहे हैं। परिचय दे रहे हैं।

0 भारतीय नीति कभी भी विदेशी नीति से मेल नहीं खा सकती।

- मैं भवितव्यता को स्वीकार नहीं करता, कर्म को स्वीकार करता हुँ। कर्म के योग में जो होगा वही भवितव्य होगा। इसे कोई भी टाल नहीं सकता।
- दुसरी प्रतिमा में व्रत है आगे उसी को प्रतिमा रूप स्वीकार करते हैं। अब काल एवं भाव सम्बन्धी अनियमितता हो नहीं सकती।
- तेल डाले धुंआ न उठे ऐसा संभव नहीं। क्षयोपशम भाव में ऐसी ही चिमनी है जहाँ धुंआ उठना अनिवार्य है। कुछ कालिमा लैम्प पर चिपकी रहती है।
- कुछ कर्मों का उदयाभावी क्षय एवं कुछ का उपशम ये ही क्षायोपशमिक भाव कहलाता है। उदाहरण - लाइट की लाइन घर के ऊपर से ही गयी है पर पहले सम्पर्क लेना होगा, उसमें भी जितने वोल्ट का कनक्शन है उतनी ही मिलेगी पुरी लाइट भीतर तो भयानक स्थिति हो जायेगी। क्षयोपशम भाव में भी कषाय भाव उतना ही रहेगा पुरा नहीं आ सकता, क्योंकि अन्य कषाय का त्याग कर दिया।
- दो तरह की लाइट होती है AC एवं DC = DC द्वेष की तरह है जो दूर फेंकती है जब कि AC = राग की तरह जो चिपका लेती है।
- राग-द्वेष दो करंट है इनसे बचें। एक में अनुराग है तो दूसरे में आंखे लाल हो जाती है।
- पहले द्वेष से बचो फिर राग से भी क्यों कि यह भी हानिकारक ही है।

- क्षयोपशम भाव के साथ क्षायोपशम चारित्र की व्याप्ति है ही नहीं।
- रत्नत्रय से बंध ही मानना ये समयसार नहीं अपना सार रख रहे हैं। शासन को खरीद रहे हैं। ऐसे में सार नहीं निःसार ही रहेंगे।
- दूसरों को समझाने के लिए स्वाध्याय नहीं होता। हाँ धर्मोपदेश भी पहले स्व के लिए है, इससे दूसरा लाभ लेता तो ले सकता है।
- जैसे चाहे स्वादिष्ट भोजन बनाया, चम्मच उसी में रहती है, पर उसे स्वाद नहीं आता इसी तरह जो दिनभर स्वाध्याय ही करते रहते हैं पर आगम विरुद्ध बोलते हैं इस चम्मच की भांति कभी स्वाद नहीं ले पायेंगे।
- प्रतिभाओं के प्रत्येक सोपान के साथ संलेखना को भी रखा। प्रतिभा 12 महिने पढ़ाई की तरह है तो संलेखना परीक्षा है जो अनिवार्य प्रश्न है।
- सप्लीमेन्ट्री वाला कितना भी अच्छा पेपर लिख लें, उसे मात्र पास ही कहा जायेगा। मोक्षमार्ग में भी किसी भी प्रश्न पत्र में सप्लीमेन्ट्री नहीं लाना है।
- व्रत एवं प्रतिमा में संक्षेप से सदोषता एवं निर्दोषता का अन्तर कह सकते हैं।
- व्रती बन गये पर क्वालीटी (गुणवत्ता) नहीं आपायी तो कर्मों की उतनी निर्जरा नहीं होगी।

000

प्रतिमा विज्ञान -5

२५-१२-२० अन्तर जानें सावद्य एवं आरम्भ में मध्याह्न,

- प्रोषधोपवास प्रतिमा में 4 भुक्ति का त्याग का उल्लेख भी है साथ ही उत्तम मध्यम जघन्य के भेद से भी अलग-अलग कथन प्राप्त होता है।
- भाजीपाला = हण्डीपाले, रुई मग्गा = हाथ करघा
- सातवीं प्रतिमा मध्य में रखी वह बीच का पड़ाव जैसा है।
- 8वीं में प्रमुख आरम्भ का त्याग कहा। आजिविका - अर्थ उपार्जन नहीं करेगा किन्तु गौण आरम्भ का त्याग नहीं किया। अपना भोजन-पानी आदि सब कर सकता है।
- उत्तराधिकार हेतु जैसे पुत्र को गोद ले सकते हैं, वैसे ही पुत्री को भी गोद ले सकते हैं। वह और अच्छे से घर चला सकती है।
- सावद्य एवं आरम्भ में अन्तर है। 8वीं प्रतिमा में आरम्भ का त्याग है सावद्य का नहीं।
- ब्याज से आय तो महा आरम्भ है।
- परिग्रह त्याग का अर्थ जितना आवश्यक है उतना रखेगा अब बढ़ायेगा नहीं।
- गौहाटी / आसाम की तरफ उसी को बेटी देना अच्छा मानते हैं जिसके घर में हथकरघा चलता हो। कभी भी भूखे नहीं रहेंगे।
- मूलाचार में भी सूत कातने का उल्लेख आया, 2000 वर्ष पूर्व।

०००

प्रतिमा विज्ञान-5

25-12-20 दान का पात्र कौन? शुक्रवार

- दान किसे दें एवं दाता कौन तथा कैसे दान दें इन प्रश्नों के उत्तर में समन्तभद्र स्वामी ने गाथा दी -
  अपसूनारम्भाणामार्याणाम् दानं दिष्यते....

जो सूना से रहित हो, आरम्भ-परिग्रह से रहित हो वह दान का पात्र है।

- चक्की, खलबट्टा, बुहारी, डेर-बाल्टी एवं चुल्हा ये पांच सूना है।

गृहस्थ के आरम्भ त्याग प्रतिमा में आरम्भ का त्याग है पर इन पांच सूना से सावद्य होता है आरम्भ नहीं।

- आगम में आया कि क्षुल्लक 7-8 घर से भोजन लेकर एक चौके में बैठकर आहार कर सकता है। इसी बीच यदि कोई मुनिराज आ जाये तो अपने ही आहार में से वह मुनि महाराज को दान दे सकता है। जब क्षुल्लक जी आहार दे सकते हैं तो फिर 8-9-10 प्रतिमा वाले तो आहार दे ही सकते हैं। 8-9-10 प्रतिमा वाले तो आहार बना भी सकते हैं।
- निमन्त्रण 10 प्रतिमा तक ही चलता है, आगे नहीं।
- जैसे कोई भी कक्षा हो परीक्षा अनिवार्य होती है, उसी प्रकार सल्लेखना एक अनिवार्य पेपर है। हाँ इस पेपर में आप खूब नकल कर सकते हो। साधना के क्षेत्र में नकल करें किन्तु अकल के साथ।
- वेटिंग का टिकिट लेना ठीक नहीं, टीकीट लेकर वेट करना पड़े तो

कर सकते हैं।

- प्रतिमा लेने का मूल भाव है- मोह को कम करना। नहीं तो दर्शक बनने पर भी घर-परिवार, नाती-पोते, जमीन-जायदाद से मोह रखते हैं, यह अधोगति का कारण बन जाते हैं।
- साधना में सदैव एक-दूसरे के पूरक बनकर संसार की यात्रा को पूर्ण कर मुक्ति को प्राप्त कर सकते हैं।
- आरम्भ एवं परिग्रह के त्याग के बाद निश्चिंतता अवश्य आ जाती है।
- क्षुल्लक पात्र में आहार करते हैं और कोई पात्र लेने पर आ जाता है तो पात्र-दान भी कर सकते हैं।
- पांच सूना में विकृतियाँ आ गयी इन्हें दूर करें। चुल्हा की जगह गैस, कुएँ की जगह नल, बुहारी की जगह वाइपर, चाकी की जगह मशीन चक्की, खलबट्टा की जगह मिक्सी आदि आ गये इससे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। 5 जहर हमारे बीच आ गये हैं। वे हैं- मैदा, नमक, शक्कर, पॉलीश चावल एवं विदेशी दूध (जर्सी गाय का दूध) ये 5 सफेद जहर हैं।
- श्रावक विवेक से कार्य करें तभी व्रतों का निरतिचार पालन हो सकेगा।

ooo

26-12-20 मुर्छा करके समुर्छन मत बनों शनिवार

"जिस प्रकार मुर्छा आने पर व्यक्ति को कुछ भी पता नहीं रहता, आलिशान भवन है पर इसे ज्ञात ही नहीं। इसीप्रकार मोह रूपी मुर्छा जिसे आ जाये उसे कुछ भी नहीं सूझता दिखता। जन्म भी मुर्छा में एवं मृत्यु भी मुर्छा में, ऐसे तो वह भी समुर्छन जीव कहलायेगा।"

सूत्र है अनमोल

० नदी, कुँआ, तालाब, बावड़ी आदि में जल निकलता रहता है तो नया आता भी जाता है। संग्रह हो जाये तो सड़ने लगता है, इसी प्रकार धन का संग्रह न हो, उसका सदुपयोग हो।

० पानी बहता रहता है तो स्त्रोत सूखता नहीं, धन भी उपयोग करने से आरक्षण / संरक्षण की चिंता नहीं करनी पड़ती।

० ऐसा सुनते थे पहले धन गाढ़कर रखते थे, कई बार वह खिसककर अन्यत्र चला जाता था, आप धन का ऐसा उपयोग करें कि वह खिसककर वहाँ आ जाये जहाँ आप जाओ।

० द्रव्य का त्याग / दान धार्मिक भाव कहलाता है, द्रव्य का संग्रह मुर्छा का भाव।

० निगोद में था वहाँ मुर्छा घटायी (अल्पारम्भपरिग्रहमानुष्यायुषः) मनुष्य बना, यहाँ पर आकर मुर्छा कर रहा है तो पुनः निगोद जाने की तैयारी में ही लगा है।

० पहले नीचे का माला (मंजिल) महंगी एवं ऊपर का सस्ता रहता था आज उल्टा हो रहा है ऊपर की मंजिल महंगा और नीचे

का सस्ता मिलता है। एक पक्षी भी ऊपर उड़कर कई माला पर बैठ सकता है/बैठता हैं।

० जैसे राष्ट्रपति भवन में जो भी आता है 5 वर्ष बाद उसे खाली करके जाना ही होता है उसी प्रकार हर व्यक्ति को यहाँ से जाना ही होता है। 26 माला वाला हो या 100 माला वाला।

० विशुद्धि ऐसा धन है जो अच्छी-अच्छी वस्तुओं का संग्रह करा देगी।

० साधना के माध्यम से अनंतकाल के इस बहाव को बंद करके अविनश्वर पद पा सकते हैं।

० एक राजा भी संक्लेश के साथ एवं गरीब भी विशुद्धि के साथ रह सकता है।

० जैसे स्नान करते ही स्वच्छता-प्रसन्नता प्राप्त होती है, वैसे ही एक गरीब को विशुद्धि होने पर प्रसन्नता-स्वच्छता की प्राप्ति होती है। जैसे पक्षी किसी भी स्थान पर उड़ता चला जाता है, वैसे ही विशुद्धि वाला भी उड़ता चला जाता है।

□□○

27-12-20 रोना धर्म - पर के लिए रविवार

"जैसे फूल है तो सुगन्ध फैलती है, सूर्य आता है तो प्रकाश फैलता है। जब वही फूल कली रूप में है तो सुगन्ध नहीं रहती। शक्ति है पर अभिव्यक्त नहीं हुई। ऐसी भी कलियाँ हैं जो कभी खिल एवं खुल नहीं सकेगी। बस इसी प्रकार अभव्य हैं जिसे कभी मुक्ति नहीं मिलेगी, न ही अभव्य सम भव्य होते हैं, उन्हें भी मुक्ति की उपलब्धि नहीं होती है।"

विद्या-सूत्र

० आप सब फूल खिले नहीं पर खिलने वालों के पास बैठे हैं।
० भव्यत्व एवं अभव्यत्व किसी कर्म के उदय में नहीं, पारिणामिक भाव है, वह स्वभाव है।
० जो बालक घर वालों के भेजने से विद्यालय गया किन्तु खेल हो गया। वह बुरा नहीं मानता। वह कहता है - मैं मानूत भी तो।
० भव्य होने के बाद भी वह दया से भीगा रहता है - मैं इसके लिए क्या कर सकता हूँ। "दूसरे के दुःख में दुःखी होना तथा दूसरों के सुख में अपना दुःख भूल जाना ही धर्म है।"
० ऐसे भी अनंत जीव जो भव्य है पर अभव्य समान। कभी मुक्ति के लिए निमित्त मिलेगा ही नहीं।
० सूर्य का प्रकाश, नदी का प्रवाह आदि व्यापक होते हैं, वैसे ही में की जगह हम का प्रयोग करने वाला व्यापक होता है।
० क्षेमम् सर्व प्रजानाम" सभी का हित हो, इसमें हम भी आ गये।
० कर्म सापेक्ष होते हुये भी भाव सापेक्ष कहा, भव्यत्व अभव्यत्व को।

ooo

२४-१२-२० "मोक्षमार्ग जटील किन्तु कुटीलनहीं" सोमवार

"जिस प्रकार सीधे पाइप में धागा घुसाना आसान है पर मोड़दार (घुमावदार) में कठीन है असम्भव नहीं। युक्ति से उसमें भी आसानी से धागा/सूतली डाल सकते हैं। उसी प्रकार मोक्षमार्ग में होता है, जटील सा लगता है पर जटील जैसा नहीं क्यों की कुटील नहीं है।"

"जिस प्रकार विद्यार्थी को परीक्षा में प्रश्न-पत्र पुछा जाता है। प्रतिभा सम्पन्न तो उसे समय से पहले कर देता है पर जिसने मात्र अध्ययन किया युक्ति नहीं लगाई वह सोचता है पढा तो सब है, ये कहाँ से आ गया? पाठ्यक्रम से ही प्रश्न-पत्र बनाया है पर सही ढंग से नहीं याद कियां। ऐसे ही मोक्षमार्ग जटील तो हो सकता है पर कुटील नहीं।"

"जिस प्रकार गाडी में गियर है तो ब्रेक भी होता है, उसी प्रकार मोक्षमार्ग में भी दो प्रकार की चर्या होती है कर्कश एवं मृदु। दोनों में सामंजस्य बनाकर चलना चाहिए।"

विद्या - सूत्र

- मोक्षमार्ग में मनवचनकाय का उपयोग शक्ति के अनुसार (साथ-साथ) युक्ति का भी प्रयोग करना चाहिए।
- मोक्षमार्ग सरल एवं स्वाश्रित है, किन्तु संसार की अपेक्षा वह जटील जैसा लगता है जटील नहीं।
- किसी भी समस्या से टकराओ नहीं, युक्तिपूर्वक समाधान करें।

o घुमावदार पाइप में भी सूतली डाली जा सकती है, युक्ति से। मुख पर चालनी लगा दो चीटियाँ ही ये काम कर देगी, (चुहिया की पुंछ पर बांधने से भी कार्य हो सकता है।)
o जल्दी हो तो फिर भी ठीक जल्दबाजी करना ठीक नहीं।
o ज्ञानोपयोग से ही श्रेणी ऐसा नहीं हैं, दर्शनोपयोग से भी श्रेणी चढते हैं। दूसरा दर्शनोपयोग से चढने वाले की कर्म निर्जरा ह्रस्व (कम) काल में होती है, ये आगम का वाक्य है।
o ज्ञानोपयोग का काल बहुत बड़ा है जब कि दर्शनोपयोग अवग्रह, ईहा, अवाय, धारणा, सबको मिलाकर भी काल दीर्घ है।
o ज्ञान से निर्जरा होती है पर ज्ञानी यदि चंचल हो तो निर्जरा नहीं होती।
o ज्ञान को संयत बनाना परम आवश्यक है, यही जीवन का लक्ष्य हो तभी ज्ञान का होना अच्छा माना जायेगा।
o आगे जाने की बजाय भीतर जाना महत्त्वपूर्ण होता है। गहराई में जितने जायेंगे उतनी ही शान्ति मिलेगी।
o आलसी नहीं बनो परन्तु जल्दबाजी भी नहीं करना चाहिए।
o मोक्षमार्ग में भागने को महत्त्व नहीं, जागने को महत्त्व दिया है।
o बुन्देलखण्ड में मारे शब्द चलता है, खाने के मारे, इनके मारे अर्थात कारण अर्थ में मारे का प्रयोग होता है।
जितना ज्ञान शान्त उतना ही निर्जरा का लेवल बढ़ेगा।
o अन्तर्मुहूर्त के कई भेद है। एक श्वाच्छोश्वास में भी अन्तर्मुहूर्त एवं अन्तर्मुहूर्त में कई श्वाच्छोश्वास होते हैं। ooo

21-12-20 नहीं चाहिए ऐसी कृपा मंगलवार

"चारुदत्त की कहानी सबने सुनी होगी। माता-पिता की एवं संबंधीयों (मामा) की कृपा से चारुदत्त को दारुदत्त बनते देर न लगी। करोड़ो दीनार का स्वामी होकर दर-दर भटकने लगा। एक बार व्यसनों में लगने पर ऐसा ही होता है। सब चौपट हो जाता है, चार पथ जिसमें हो चौपट (चौराहे) पे आ जाता है।"

सूत्र-अनमोल

0 निमित्त कुछ नहीं करता ऐसा नहीं करने वालों को और अधिक उकसा देता है।

0 दौलत राम जी ने लिखा "नगरनारि को प्यार यथा कादे में हेमकमल है" अर्थात वेश्या को आपके धन से प्यार है आपसे नहीं; ऐसी ही प्रत्येक संसारी की स्थिति होती है।

0 पुण्य यदि जबरदस्त है तो पापोदय में भी कोई न कोई पुण्य का सहारा मिल ही जाता है।

0 प्रथमानुयोग के इन कथानको से वैराग्य दृढ़ होता है।

0 घरवालों की कृपा से बचों, जो आपको पाप की ओर ले जा रहे हैं।

0 उपादान यदि कमजोर तो निमित्त का बहुत प्रभाव पड़ता है।

0 वस्त्रों में हिंसा का पुट आ गया, कैसे अहिंसक कहलाओगे। ये सब पुद्गल की परिणति है, ऐसा मानना भी गलत है।

0 शुद्धि-अशुद्धि का विवेक रखना अनिवार्य है। चिकित्सक ऑपरेशन के समय कैसा रहते है? पर वे ही जब खून बहाने हेतु

अश्व आदि का रक्त देते हैं, न जाने इनका धर्म कहाँ चला जाता है।

० ऐसी प्रेरणा मत करो कि अहिंसा की रेखा से नीचे जीवन चला जाये।

० पुद्गल ही तो है, इससे क्या? ऐसा मानना ठीक नहीं, क्यों कि यह जीवन ही पुद्गलमय बना हुआ है।

० आज कोरोना से भी आगे की बीमारी आ रही है, डॉक्टर कहता है ऐसी औषधी का निर्माण करो कि रोगी मरे नहीं परन्तु ठीक भी न हो।

० पैसा भी तो पुद्गल ही है, इधर का उधर हो रहा है। ये तो चारदत्त से भी 10 गुना आगे का हो गया।

० वस्त्र में मांस का अंश - प्रवचनसार में आया यह धोने से तो क्या अग्नि में डाल भी दो तो भी मांस के अंश भी खत्म नहीं होते।

० सबको पुद्गल का ही परिणमन मानकर छोड़ दोगे तो फिर खाने में शुद्धाशुद्धि तो कभी रह ही नहीं पायेगी।

० जो चारित्र को गौण करके मात्र तत्व विवेचन करने में लगा है तो वह चारदत्त से भी आगे का कर रहा है।

० आज नकली मांस का भी निर्माण हो रहा है। कैसा मांस से प्रेम है? संकल्पी हिंसा तो हो ही गयी।

० अब सावधानी ही मात्र समाधान है।

० आपका दिमाग तो ठीक है, नेत्रेन्द्रिय भी कमजोर नहीं है परन्तु श्रोतेन्द्रिय को ठीक करो। कान खेंचो तभी वह ध्वनि कानों को सुनायी देगी। ००

30-12-20 असम्बद्ध प्रलाप से बचों बुधवार

एक लड़का सुनता तो है पर मानता नहीं बल्कि दूसरों को भी आपकी बात गलत स्वरूप में प्रस्तुत करता है। दूसरा बड़ा लड़का आपकी बात सुनता भी है, मानता भी है एवं ज्यों का त्यों अक्षरशः दूसरों को भी बताता है। आप किससे प्रेम करेंगे? स्वभाविक है बड़े लड़के को ही चाहेंगे। व्याख्या कभी भी घर की नहीं होती, इसे सदैव ध्यान रखें। अन्यथा वह असम्बद्ध प्रलाप होगा। तीन पुरुषार्थ से रहित कथा करना असम्बद्ध प्रलाप कहलाता है।

विद्या सूत्र

- राजवार्तिक में आचार्य अकलंकदेव ने मोक्षमार्ग में चलने वालो के लिए बहुत ही मार्मिक शब्द दिया - असम्बद्ध प्रलाप।
- मोक्ष में किसी को विसंवाद नहीं किन्तु मोक्षमार्ग में विसंवाद आ जाते हैं। विसंवाद से कभी भी मोक्ष मिलने वाला नहीं हैं।
- द्वीसंधान कवि - एक ओर से पढ़े तो रामायण का अर्थ, दुसरी ओर से महाभारत का अर्थ निकलेगा। ऐसे भी भारत में कवि हुये है।
- पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) का विवेचन केवल भरत में ही मिलता है, भारत से बाहर नहीं।
- जैसे वाण निकल जाने पर पुनः लौटता नहीं वैसेही वाणी भी एक बार बोल देने पर पुनः लौटती नहीं।
- खोजो एवं खोदो। जहाँ है वहीं पर खोदो तभी पानी मिलेगा।

- जैसे नक्षत्र/समय चले जाने पर बीज बोने से क्या लाभ? वैसे ही द्वारिका जलने लगी अब कुछ नहीं केवल दो बचेंगे, शेष स्वर्णनगरी खाक (राख) हो गयी। पानी ने भी पेट्रोल का काम किया।
- पागल की आँखों में पानी नहीं होता क्योंकि संवेदन नहीं होता। संवेदन होने पर ही हँसना-रोना-चिन्तन आदि होता है।
- स्वाध्यायमात्र से कुछ नहीं कदम बढ़ाना जरूरी है तब चिंतन भी सही दिशा में हो।
- भगवान बनने के लिए पहले भगवानदास (भगवान का दास) बनना भी अनिवार्य है, नहीं तो कभी भी भगवान बन नहीं सकते।
- भगवान एवं भक्त दो हैं ही नहीं। दोनों एक हैं।
- "श्रमणस्य भावो श्रामण्य" श्रामण्य के बिना मोक्षमार्ग नहीं। प्रवचनसार में कितनी ही बार लिखा है किन्तु ध्यान जाये तब तो...।
- असम्बद्ध-प्रलाप से बचेंगे तभी मोक्षमार्ग की भूमिका बन सकती है।
- कैसा जमाना आ गया? माल नहीं, पैसा नहीं, कोई रिकार्ड नहीं, फिर भी लाखों का व्यापार हो रहा है- वायदा व्यापार शुद्ध सट्टा है यह व्यापार नहीं।
- रावण माला फेरते हुये भी उद्देश्य गलत होने से पाप को ही बांधा, राम वन में भटकते हुये भी उद्देश्य सही होने से सबके मुखों पर बस गये। हर व्यक्ति राम बनना चाहता है। राम पर पचासों नाम पर रावण कोई भी नाम नहीं लेना चाहता।

ooo

31-12-20 "वर्ष का ही नहीं - संसार का भी अंत हो" शुक्रवार

"जिस प्रकार स्वर्ण बनाने का रसायन सिद्ध करने के लिए जो नियमावली है उसमें शत-प्रतिशत पालन होना चाहिए, साथ ही तकदीर (भाग्य) में भी होना चाहिए उसी प्रकार साधना के क्षेत्र में भी घटित होता है, जो भी संहिता है उनका पालन करेंगे एवं उपादान में योग्यता होगी तो अवश्य ही सफलता मिलती है।"

विद्या-वाणी

- हाथ में ही नहीं, माथे पर भी लकीर होती है फिर फकीर क्यों बनना।
- चलने से मंजील मिलती है - बातों से नहीं।
- आज वर्ष का अन्तिम दिन है, ऐसी लगार में लकीरें हो ताकि संसार का भी अन्त हम कर सकें
- नींबू को लोहे के यंत्र (चाकु) से बनाने पर रसायन की सिद्धि नहीं हुयी अतः नींबू को लोहे से बचायें।
- संसारी प्राणी सब कुछ छोड़ने को तैयार है, परन्तु कषाय नहीं छोड़ पाता।
- गोद का बच्चा भी अभिमान करता है - हठ करता है, क्यों की उसे भी संस्कार ऐसे ही मिले हैं।
- बनिया का बेटा गर्भ से ही संस्कार लेकर आता है, बाद में किसे दबाना यहाँ आकर सीख जाता है अर्थात दूध में पानी नहीं, पानी में दूध मिलाने लग जाता है।
- भाग्य भी साथ तब देता है जब कषाय का विमोचन होता है।

o सही साधक वही है जो पुरा मिलने पर भी उस ओर दृष्टि नहीं ले जाता। वह जानता है चाहने से कभी नहीं मिलता। उपादान में योग्यता होना भी परम आवश्यक है।

o सब मिलने पर भी भोग पायें जरूरी नहीं। बड़े-बड़े सेठ-साहुकार सब है पर खा नहीं सकते, हाँ खाने के नाम पर गम खा सकते है अथवा सबसे महंगी दवाई खा सकते है।

o बुद्धलोगो को दवाई ही नहीं मिलती, इनको समय पर महंगी दवाई उपलब्ध ही रहती है।

o डाक्टर भी ऐसी दवाई देता है-रोगी मरे भी नहीं एवं ठीक भी न हो, पैसे निकालते जाता है।

o आज आयुर्वेद में नाड़ी परीक्षण से बिनायंत्रों कीसहायता से रोग का परिक्षण एवं इलाज हो रहा है। अब भारत पुनः लौट रहा है।

ooo

1-1-2021। "2021 में 21 काम करना है। 9 नहीं" शुक्रवार

o तारीख नहीं तिथी याद रखें। भारतीय संस्कृति में जो भी कार्य होते हैं, वे तिथी अनुसार होते हैं, तारीख तो विदेशी संस्कृति में आती है।

o ज्योतिष शास्त्र, कुण्डली, ग्रहण, पंचांग, अधिकमास, मल मास ये सभी "सन्" में नहीं संवत् में मिलेंगे।

o इन सबसे संदेह नहीं किन्तु परिणामों में अवश्य तब्दीली आती है।

o किसी भी तीर्थंकर अथवा, राम, हनुमान, गणेश जी आदि की जयन्ती अथवा अन्य शुभ तिथी सन् से नहीं तिथी से ही मनायी जाती है।

o "वर्तना परिणामक्रियापरत्वापरत्वच कालस्य" ऐसा तत्वार्थ सूत्र में आचार्य उमास्वामी महाराज ने काल द्रव्य के उपकार बताये।

o काल द्रव्य का अनुग्रह प्रत्येक द्रव्य पर है। उसी से हम द्रव्य में होने वाले परिणमन (परिवर्तन) को पहचान सकते है।

o क्षेत्र एवं काल दोनों का ही अंत नहीं, इसलिए काल का उपयोग करना चाहो तो कर लो।

o कोई भी नया-पुराना अथवा छोटा-बड़ा है ही नहीं फिर अभिमान क्यों करते हो।

o जब आकाश का अंत नहीं तो काल द्रव्य का भी अंत नहीं है।

o अनंत सर्वज्ञ भी मिलकर काल के अनंत को नहीं ढूंढ सके।

o जीव का कभी श्रृंगार नहीं होता, श्रृंगार रूपी का होता है। जीव अरूपी है मात्र ज्ञाता-दृष्टा होना ही उसका वास्तविक श्रृंगार है।

o एक-एक समय भविष्य के निकल भूतकाल हो रहे हैं, अब सन् को ही देख लो। आप तो रात के 12 बजे से तारीख मानते हो 9 बज गये 9 घण्टे इस सन् के कम हो गये ऐसे ही 2021 चला जायेगा। कुछ करना है तो कर लो।

o ऐसा काम करो कि 19 नहीं 21 बन जाओ। हम भी ऐसा ही काम कर रहे हैं।

o मुझे 10 वर्ष लगे तब जाकर मैं अपने आपको बूढ़ा समझने लगा। दांत टूट जाते हैं तब बूढ़ा मान लेते हैं वास्तव में तो आत्म तत्त्व तो अजर-अमर-अविनश्वर है।

ooo

"भूख घटाना नहीं"

"जब कोई व्यक्ति बीमार पड़ जाता है तो उसे औषध देकर निरोग किया जाता है फिर उसे भूख लगती है तो केवल मूंग की दाल का पानी दिया जाता है ताकि भूख और खुलकर लगे। धीरे-धीरे उसकी भूख बढ़ती जाती है क्यों कि एक साथ उसे भारी भोजन नहीं दिया।

इसी प्रकार आचार्यों ने कहा- पात्र देखकर प्रवचन करना चाहिए अथवा शास्त्र की बात रखनी चाहिए। पहले उसकी जिज्ञासा को बढ़ाना चाहिए नहीं तो मंदाग्नि हो जायेगी तो वह कुछ भी उपदेश ग्रहण नहीं कर पायेगा।"

2-1-2021 कैसे होगी इष्ट की उपलब्धि शनिवार

"एक जंगल में आग लगी है। उस जंगल में एक अंधा व्यक्ति है, बाहर निकलने का उपाय सोच रहा है लेकिन निकल नहीं पा रहा है वहीं एक दूसरा व्यक्ति भी उसी जंगल में जो देख रहा है कि आग की लपटें उठ रही है पर वह भी बाहर नहीं जा सकता क्यों कि पांवों से विकलांग है। उसने अन्धे व्यक्ति को इशारा किया इधर आ जाओ एवं उसके कंधो पर बैठ गया वह रास्ता बताता गया अंधा चलता गया दोनों सुरक्षित बाहर निकल गये। मतलब दर्शन एवं ज्ञान की सुरक्षा तभी होगी जब आचरण में भी लायें। आचरण तभी जब दर्शन रूपी आँखें होगी।"

विद्या-सूत्र

- इष्ट की उपलब्धि मात्र ज्ञान से नहीं हो सकती है।
- दर्शन ज्ञान का पक्ष लेता है एवं चरण आचरण का पक्ष लेता है दोनों नहीं मिलते तब तक पार हो नहीं सकते।
- एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को नीचे दिखाने में लगा है। अपनी शक्ति का परिचय देकर भय उत्पन्न करा रहे हैं। स्पर्धा की नहीं कि लक्ष्य से विमुख हो गये।
- भारतीय संस्कृति में ज्ञान के साथ चारित्र सदैव रहता है, तभी तो चरणों की पूजा होती है।
- दर्शन एवं आचरण की सावधानी यदि भूल जाओगे तो काम होने वाला नहीं।

ooo

3-1-21 टिकिट कौनसा है? रविवार

"जिस प्रकार जिस गाड़ी का टिकिट खरीदते हैं, वह टिकिट उसी गाड़ी में मान्य होता है अर्थात आपको उसी गाड़ी में बैठना होता है। उसी प्रकार एक बार आयु का बंध कर लिया अब उस गति में जाना ही है। राजा श्रेणिक जिन्होंने पहले नरकायु का बंध कर लिया अब कितनी भी विशुद्धि क्यों न हो जाये, तीर्थंकर प्रकृति का बंध शुरु हो गया, क्षायिक सम्यग्दर्शन हो गया सब है पर नरक का टिकिट खरीदा है तो जाना ही होगा। हाँ, 33 सागर की बजाय प्रथम नरक में वो भी 84000 वर्ष के लिए, इतना तो हो सकता है पर आयु कर्म बदल जावे ये असंभव है।"

विद्या-वाणी

o जैसे सूर्य के प्रताप को घने बादल रोक तो सकते हैं, पूर्ण नष्ट नहीं कर सकते वैसे ही एक बार आयु बंध किया है तो पूर्ण क्षय को प्राप्त नहीं होगी, भोगना ही पड़ेगा।

o क्षायिक सम्यग्दृष्टि, तीर्थंकर प्रकृति का बंध चल रहा है फिर भी आत्महत्या के भाव हो गये क्योंकि नरकायु का पहले बंध हो गया था अतः अन्तर्मुहूर्त पूर्व तीर्थंकर प्रकृति का बंध रुक जाता है और मिथ्यात्व में आना ही होता है, तब इसी तरह आत्मघात के परिणाम हो जाते हैं।

o पाप के उदय में द्वैपायन मुनि की तरह सब स्वाक (राख) होगया।

- सोच-विचारकर अपनी चेष्टाओं को संक्षिप्त (समेटना) करने का पुरुषार्थ करो।
- कर्म के तीव्रोदय में ऐसे ही परिणाम होते हैं, बुद्धि काम नहीं करती, पुरुषार्थ के भाव भी नहीं होते अतः जब कर्म का मन्दोदय हो तब अपने परिणामों को सुधारें, अरिहन्त-सिद्ध अथवा राम का नाम जपें।
- ये भारत भूमि है अच्छे कार्य करके स्वर्ग का टिकिट भी मिलता है तो बुरे कार्य करके नरक का द्वार भी खुला रहता है।
- टिकिट जैसा लिया वैसी ही गाड़ी में बैठना पड़ेगा। हमारे-तुम्हारे हाथ में कुछ नहीं, है तो मात्र परिणाम, अपने भावों पर निगरानी रखें।
- एयर कंडीशन में भी पसीना आ रहा है क्यों ज्वर भीतर में है। भीतर के ज्वर को उतारे बिना A.C. भी काम नहीं करता, इसी तरह भीतरी परिणामों को सुधारे बिना बाहरी संयोगों को नहीं बदल सकते।
- वातानुकूल एवं बातों के अनुकूल दोनों ही कर्म-सिद्धान्त के सामने गौण हैं।
- मांग मत करना, बच जाओगे-फायदे में रहोगे। यदि मांग करोगे तो निदान कहलायेगा, कूबत अनुसार ही मिलेगा, घट-बढ़ भी नहीं हो सकती।
- क्रिकेट में गेंद से लगाते ही रन लेना शुरु कर देता है, सजग रहता है, उससे कई अधिक सजगता मोक्षमार्ग में चाहिए तभी आगे बढ़ेंगे।

ooo

५-१-२। Seenear कहते हैं सिनियर सोमवार

"जिस प्रकार नये-नये छन्ने में पानी जल्दी छनता नहीं, वैसे ही नये-नये दिमाग में धर्म की बात जल्दी घुसती नहीं। हर बात में नया-नया ठीक नहीं, पुराना होना आवश्यक है क्यों कि पुराना स्वीकार कर लेता है तो नये के लिए अवसर भी देता है।"

"जिस प्रकार से एक दुकानदार एक दिन में हजारों मीटर कपड़ा नापता है किन्तु हजार को कभी भी एक साथ नापा नहीं जा सकता उसी प्रकार केवली भगवान ने बहुत कुछ कहा किन्तु पुरा कह नहीं सकते। वे अनंत को जानते हैं पर उसे कह नहीं सकते, एक क्या अनंत केवली मिलकर भी उसका कथन करने में सक्षम नहीं हैं, फिर मैंने जो कहा वही ठीक है ऐसा अभिमान क्यों कर रहे हो?"

अनमोल-वाणी

- अनुभव, निरिक्षण, चिन्तन आदि करें तभी नया पुराना हो पाता है।
- हम अपने उपयोग रूपी कपड़े को धोना ही नहीं चाहते, बस ये नया ही बना रहे, ऐसा सोचना गलत है।
- पहले सोचो फिर बोलो। उतावली करने वाला सोचता नहीं, सोचनेवाला कभी उतावली नहीं करता। देखा-देखी भी नहीं करता।
- भगवान के दर्शन बिल्कुल सामने खड़े होकर न करें, आजु-बाजु से करना चाहिए।

- हमारा-तुम्हारा ज्ञान छद्मस्थ है, परोक्ष ज्ञान है फिर परोक्ष ज्ञान से प्रत्यक्ष की तुलना क्यों कर रहे हैं?
- भगवान ने पुरा देखा - पुरा कहा नहीं फिर जिनवाणी मे पढ़कर अपना ज्ञान क्यों लगा रहे हो?
- कथन हमेशा सीमित ही होता है। भगवान के ज्ञान पर कोई संदेह नहीं किन्तु उसके इतने पहलु / बिन्दु है जो कि कभी समाप्त ही नहीं हो सकते।
- नाना जीवा नाना कम्मा.... कुन्दकुन्द आचार्य ने कहा नाना तरह के जीव है, नाना उनके कर्म है और अनेक भावों की उपलब्धि होती रहती है इसलिए अपने एवं पराये के बीच संघर्ष नहीं होना चाहिए।
- मैं जो कह रहा हूँ, वही सही है यह धारणा ही गलत है, आपके पूर्वजों ने जो कहा उसे पहले देखें। एकसे एक सिनियर हैं।
- अंग्रेजी की बड़ाई तो नही कर रहा, पर सिनियर शब्द कह रहा है See near। अपने पास देखो। आज सब दूर ही देख रहे हैं।

जो इन्द्रियों का दमन करेगा वही सिनियर है।
- हरेक (प्रत्येक) व्यक्ति अपनी सोच दूसरे के दिमाग में घुसाना चाहता है, अफसोस की बात यही है।
- आचार्य कुन्दकुन्द के रहस्य को समझना सबके बस की बात नहीं। अपने-पराये में विसंवाद न हो। जहाँ विसंवाद की स्थिति तो मौन रहो। उनके रहस्यों को समझना बड़ी टेड़ी खीर है।

- कुन्दकुन्द का नाम लेने वाले तो बहुत हैं परन्तु काम करने वालों पर संदेह करते हैं। ये ही तो पंचमकाल, हुण्डाअवसर्पणी काल है, यहाँ अनहोनी ही होगी।
- कुन्दकुन्द आचार्य की बात हम शिरोधार्य करेंगे, आप जो कह रहे हैं उसे नहीं।
- ममता को छोड़ेंगे नहीं तब तक समता आयेगी नहीं।
- मैं तो समझाकर ही रहूँगा, ऐसा अभिमान मत पालो एवं न समझने पर दयनीय भी मत बनो।
- जब भगवान नहीं समझा सके तो आपकी प्रतिज्ञा ही गलत है।
- सर्वज्ञ ने पूरा जान लिया। आकाश का छोर नहीं है क्योंकि "आकाशस्यानंता" अंत देखा नहीं फिर भी अनंत देखा कहा जाता है अर्थात् मनःपर्यय ज्ञान से भी अनंत जान लिया।
- जिस प्रकार पानी में लठिया से टटोल-टटोलकर एक-एक कदम आगे बढ़ाते हो वैसे ही धीरे-धीरे चलो, ज्यादा आगे मत बढ़ो अन्यथा गड्ढे में गिर जायेंगे।
- आत्मा के भाव नापने का पुरुषार्थ करो। श्वांस के साथ
- बस परिणामों पर दृष्टि हो।
- विवाद न हो, संवाद रखो। संवाद तभी जब समता होगी। पुरुषार्थ की आवश्यकता है समता बनाये रखने के लिये।

[मुख को मोड़ लो अन्यथा मन मोड़ दिया जायेगा] ❑ ❑ ❑

5-1-21 सब कुछ आकाश नगर सम मंगलवार

"जिस प्रकार आकाश में बादलों का जो चित्र होता है, वह कुछ ही समय में परिवर्तित हो जाता है क्षणिक होता है, उसी प्रकार से यह जीवन क्षणिक है, कब विनष्ट जावे पता नहीं इसीलिए आकाश नगर सम ऐसी उपमा इस जीवन को दी।"

सूत्र - अनमोल

- सूर्य तो दिखता है परन्तु सूर्य की गति नहीं दिखती, इतना धीरे-धीरे चलकर वह अस्ताचल की ओर चला जाता है।
- जीवन का सूर्य ढले उससे पूर्व किसान की भांति कुछ काम कर लो।
- उद्वेग से अनर्थ घटित होता है तो संवेग भाव से जो अनर्थ होने वाला हो वह भी टल जाता है।
- संवेग भाव दुर्गति से बचा सद्गति की ओर ले जाते हैं।
- जैसे गोद में खेलाने वाला बालक भी माँ के भावों को समझता है। चुटकी बजाने पर दूध पीने लगता है इसी तरह हमें भी अतीत की घटनाओं से पाठ लेना चाहिए।
- समय पर वितरण करना आवश्यक है। यदि वितरण नहीं तो तरण कैसे होगा? अमेरीका में जो भूखमरी की समस्या आयी उसका मुख्य कारण वितरण का अभाव ही है।
- प्रतिव्यक्ति 36 करोड़ की अर्थव्यवस्था वाले राष्ट्र में करोड़ो लोग एक-एक ग्रास को तरस रहे हैं क्योंकि तिजोरियों में भर रखा है, कालाबाजारी कर रहे हैं। दिन ढलने से पूर्व परिवर्तन आवश्यक है।

ooo

6-1-21 लोकतंत्र में लोभतंत्र नहीं बुधवार

▫ अनादि से शरीर को ढो रहे हैं इसके विषय में सोचो। इसको उतारने का जो उपाय करता है वह जहाँ रहता है, वहीं संतुष्ट होकर रहता है।

▫ आप द्रव्य चढ़ाते हैं तो ले जा कितने गुने रहे हैं, यह भी तो ध्यान रखो। चक्रवर्ती भी सब कुछ न्यौछावर कर देता है वीतराग प्रभु के सामने क्योंकि ये सब नश्वर है, यहाँ जो मिलेगा वही अविनश्वर है। उस अविनश्वर को कोई चुरा नहीं सकता।

▫ विश्व का सबसे बड़ा राष्ट्र भारत है एवं सबसे धनाढ्य राष्ट्र अमेरिका है। जहाँ सोने के बिस्किट नहीं ईंटे हैं। आज स्थिति यह है कि करोड़ों लोग दाने-दाने के लिए तरस रहे हैं। कारण पूंजीपतियों द्वारा पूंजी को दबाकर बैठ जाना।

▫ यहाँ जड़ अर्थात लोभ का संग्रह नहीं लोक अर्थात जन का संग्रह है। लोकतंत्र में लोभतंत्र नहीं आना चाहिए।

▫ जो सज्जनता को धर्म रूप में अपना लेता है उसकी सुगन्धी चारों ओर फैलती है, वह सुगन्धी कभी लौटती नहीं।

▫ कोरोना की औषध (वेक्सीन) जो विदेशों ने बनायी वह महंगी भी एवं अशुद्ध, मांसाहार से युक्त, साइड इफेक्ट वाली बनायी। भारत ने पूरे विश्व को बता दिया मात्र 200 रु. में शुद्ध, शाकाहारी, रोग निवारक, आरोग्यवर्धक, गुणवत्ता से भरी औषध का निर्माण किया।

o विदेशी दवा मरती है, भारतीय दवा (आयुर्वेद) कभी मरती नहीं अर्थात् मृत्युञ्जय औषध है।
o विदेशी दवा के अनेक दुष्परिणाम देखते हैं, भारत में रोगकीजड़ से खत्म किया जाता है।
o भारतीय औषध अहिंसक है, विदेश मात्र हिंसा पर ही विश्वास कर हिंसक औषध बनाता है।
o अब कोरोना की औषध निश्चिंत एवं निःसंदिग्ध होकर ले रहे हैं।
o शुद्ध द्रव्य, शुद्ध भावों से चढ़ाओगे तभी तो अविनश्वर पद पाओगे।
o यहाँ तो रत्नत्रय का खजाना लुट रहा है लूट सको तो लूटकर ले जाओ।
o भोजन तैयार है आप बैठ जाओ हम खिला देंगे, परन्तु शुद्ध को अशुद्ध मत बनाओ। भावों को निर्मल रखकर ग्रहण करें।

ooo

7-1-21 वास्तविक स्वाद लेना सीखो गुरुवार

"जिस प्रकार से गुंगा व्यक्ति गुड़ का स्वाद लेता है, अनुभव करता है, आनंद भी उठाता है, किन्तु दूसरें को बता नहीं सकता इसी तरह मोक्ष-मार्ग में जो शुद्धोपयोगी मुनिराज है वे आत्मा के वास्तविक आनन्द को लूटते हैं, पर वह अनुभव ही किया जा सकता है, बताया नहीं जा सकता।"

अनमोल सूत्र

० पंगत में बैठने के बाद जिसे भूख लगी है वह तो तुरन्त अपनी थाली पर ध्यान रख खाना प्रारम्भ कर देता है किन्तु जिसे भूख नहीं वह इधर-उधर देखता है अथवा बातें बनाता है।

० सब कुछ भूलेंगे तभी वास्तविक आनंद आयेगा।

० दाल के साथ नमक मिलाकर खाने की आदत पड़ गयी, ऐसे में न ही दाल का वास्तविक स्वाद ले रहे हो, और न ही नमक का स्वाद ले पा रहे हैं। इसलिए हमारा आपके साथ संबंध/तालमेल ही नहीं।

० मोक्षमार्ग भूलने के लिए होता है, याद करने के लिए नहीं।

० बाहरी पकवानों पर ही नजर फिसल रही है, भीतर जो असली मिठाई है उसका आनंद कैसे आयेगा?

० पंचेन्द्रिय के विषय में रस है ही नहीं तो रस कैसे आयेगा।

० हम बहुत पीछे रह गये ऐसा मत मानो। हमारे पहले जैसे अनन्त सिद्ध मोक्ष चले गये वैसे ही आगे भी अनंत तीर्थंकर होंगे, चिन्ता मत करो हम बीच में हैं।

० ० ०

8-1-21 कर्म कैसे करें शुक्रवार

"जिस प्रकार असह्य दाह चन्दन के लेप से ठीक हो जाती है पर कौनसा चन्दन, लाल नहीं सफेद चन्दन हो। इसी तरह कर्म से अनुकूलता मिलती है, कौनसे कर्म से? पुण्य कर्म से, पाप कर्म से तो प्रतिकूलता, दुःख, असाता ही पल्ले में आयेगी।"

अनमोल-सूत्र

- जब समझाया उस समय यदि सचेत रहकर समझ गये तो पुण्य कर्म बंध से साथी-सनाथी आदि सब जैसा चाहते हैं वैसे मिल सकते हैं।
- कर्म ही किया हुआ लाल को सफेद तथा सफेद को लाल चन्दन बना देता है। तत्त्वज्ञान से लाल को सफेद बनाने का पुरुषार्थ करो।
- कर्मोदय में अज्ञानी कर्म बंध कर लेता है उसी कर्म के उदय में तत्त्वज्ञानी कर्मों की निर्जरा कर लेता है।
- मन का काम मत करो मन से काम लो तभी मोक्ष मिलेगा।
- मन का काम करने पर हमारा आशीर्वाद भी फीका पड़ जाता है, जैसे- अनुपात के अभाव में दूध मीठा नहीं हो पाता।
- रोग से चिपकना नहीं होता किन्तु ज्ञान से याद करके हम वस्तु (पर पदार्थ) से चिपक जाते हैं। यह चिपकन ही कर्मों का बंध करने वाली है। राग के अभाव में ज्ञानी कर्मरज से नहीं चिपकता।
- स्वाध्याय (ग्रन्थ) का मूल्य सदुपयोग है। साता में कारण है दुनिया की बातों के लिए स्वाध्याय तो वह दुरुपयोग है।

9-1-21 शिक्षा देती प्रकृति शनिवार

"मोक्षमार्ग में उपादान एवं निमित्त दोनों की अपनी-अपनी भूमिका होती है, लेकिन मुख्यता उपादान की अनिवार्य है। जिस प्रकार छोटा बालक जब चलना सीखता है एक लकड़ी की गाड़ी का सहारा दिया जाता है वह चल पड़ता है किन्तु यदि पाँव नहीं उठायेगा तो गाड़ी होने पर भी चल नहीं सकता, बड़ा होने पर भी नहीं चल पायेगा। उपादान में ही कमी है।"

• विद्या-सूत्र

- अकृत्रिम की ओर दृष्टि ले जाओ, कृत्रिम का अहंकार (अभिमान) चूर-चूर हो जायेगा।
- नदी, पहाड़, वृक्ष, झरने किसने बनाये, किसी ने नहीं बस प्रकृति को देखोगे तो स्वभाव की ओर दृष्टि ले जा पाओगे।
- निमित्त से दृष्टि हटाकर उपादान की ओर दृष्टि ले जाने का पुरुषार्थ करो।
- चिकित्सा तभी तक कराते हो जब तक सुधार के आसार है, चिकित्सक के हाथ खड़े कर देने पर आप पैसा नहीं लगाते क्यों कि आपको उपादान का महत्व समझ में आगया।
- मोह है तभी तक अशान्ति है। आग (ईंधन) हटा दिया अपने आप जो खदबद-खदबद हो रही थी सब शान्त हो गयी।

o भीतरी उपादान के माध्यम से बाहरी निमित्तों में भी परिवर्तन लाया जा सकता है, इसलिये आचार्यों ने पुरुषार्थ करने को कहा।

o शुरुआत में जुगाड़ (बच्चे की गाडी) की आवश्यकता है, बाद में तो वह मात्र दिमाग की कसरत है।

o निमित्तो के अम्बार भी लगा दो तो भी उपादान में योग्यता के अभाव में कार्य नहीं होता। जैसे-यदि आँख में देखने की बिल्कुल भी शक्ति नहीं तो एक नहीं चार-चार चश्मा भी लगा लो, देख नहीं सकते।

o आज भी आदिवासी लोगों को कुछ भी सुविधा की आवश्यकता नहीं, वे जंगल की वनस्पति आदि से ही अपने को स्वस्थ कर लेते हैं। आपके पास पैसा है अतः औषधी को ही खुराक (भोजन) बना लिये। आजीवन प्रतिदिन दवाई लेना अनिवार्य बना लिया।

o यहाँ 2% लोगों को चश्मा नहीं मतलब 98% की दृष्टि ठीक नहीं, आदिवासी में 2% को भी चश्मा नहीं मतलब सभी की दृष्टि अच्छी है, प्रकृति के आश्रित जो रहते हैं।

o कौनसी उम्र में अध्ययन कराते हैं बच्चों को उसीप्रकार यह भी ज्ञात हो कि कौनसी उम्र में औषधोपचार करते हैं। जब शरीर वृद्धिंगत है तो दवाई से ही ठीक हो ऐसा मत करो, उस समय उसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढाओ।

o उपादान से लगाव हमेशा बना रहे, थोड़ा बहुत निमित्त से भी।

ooo

10-1-21 "आओ निर्भिक बनें" रविवार

"जिस प्रकार सूर्य को जब राहु ग्रास बना लेता है तो उसे खग्रास (ग्रहण) कहते है इसी प्रकार जीवन में जब तक मोह-भय रूपी राहु रहेगा ग्रहण ही लगा रहेगा (अपने भीतर की शक्ति प्रकाशमान नहीं हो पायेगी।"

"एक शेर के सामने भी जो व्यक्ति भयभीत नहीं होता, शेर भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ता बस आपके उसको मारने के भाव नहीं होना चाहिए। शेर को भी वश में करने की ताकत हमारे भीतर है। पहचानो अपने आपको।"

विद्या - सूत्र

- सब तिर्यंचो को बांधा जा सकता है पर शेर को कभी भी बांधा नहीं जाता, न ही गले में पट्टा डाला जाता है।
- शस्त्रों से नहीं शास्त्रों के सूत्र से सिंह को भी पछाड़ने की शक्ति हरेक व्यक्ति के भीतर है, फिर डर किसका?
- विषमता में भी साम्यता आ सकती है निर्भिक होने पर।
- जब तक जीवन को विनश्वर समझोगे, चार संज्ञाओं से जब तक ग्रसित रहोगे तब तक अविनश्वर की ओर दृष्टि ले जाना ही असम्भव है।
- मृत्यु की बात सत्य होते हुए भी उसको स्वीकारने से डरते रहते है मतलब सत्य से डरते है जो सत्य से डरता है वह कभी भी असत्य को छोड़ नहीं सकता।
- चार संज्ञा को वश कर लिया तो आपको जीतने वाला कोई नहीं, यदि चार संज्ञा है तो किले के भीतर भी कंपकंपी होती रहेगी।

o 100 साल की कंपकंपी वाली जिन्दगी से तो 3 दिन की दहाड़ते हुये की जिंदगी बहुत अच्छी है।

o गले में पट्टा मत बंधवाओ शेर की तरह, भले ही वह सोने का भी क्यों न हो?

o आज जड़ एवं चेतन के बीच संक्रमण हो गया है।

o ज्ञान में कंपीकंपी होती है जब की आस्था स्थिर रहती है, उसी आस्था को मजबूत बनाने का पुरुषार्थ सदैव करते रहना चाहिए।

o तीन लोक हिल जाये किन्तु सम्यग्दृष्टि कभी हिलता नहीं।

o शेर होकर पिंजड़े में रहना, ये अच्छा नहीं हाँ मनुष्य के पास इतना पॉवर (शक्ति) है कि वह शेर को भी पिंजरे में बन्द रख सकता है।

o o o

11-1-2। भारत में जो है वह कहीं नहीं सोमवार

"जीव और पुद्गल नाचे यामें कर्म उपाधी है, ये पंक्तियाँ बारह भावना में पढ़ते हैं। चिंतन करते हैं तो पाते हैं कि बिल्कुल सही कहा गया है, जैसे अभी अर्घ्य चढ़ा रहे थे तो भक्ति में वृद्ध दादा जी भी दोनों हाथ ऊपर कर नृत्य करने लग गये। नृत्य की उम्र (अवस्था) नहीं होती। सर्दी में भी गर्मी आ जाती है। ये सब भक्ति से होता है किन्तु इतना अवश्य समझ लो कि नाच कौन रहा है? और नचा कौन रहा है?"

(अनमोल-वाक्य

- पुद्गल सदैव जीव के गुणों से बहिर्भूत है किन्तु पुद्गल को अनेक कर्म दिखाने का श्रेय जाता है।
- जो चीज भारत में है वह विश्व में कहीं नहीं।
- सम्पदा कभी सम्पदा को नहीं भोगती, भोक्ता भोगता है। मूल्य भोक्ता का है।
- किसानियत का मूल्य किसान के कारण से है। धरती का भी तभी मूल्य है।
- मूल्यांकन करने वाले का मूल्य कोई भी नहीं समझता, इसीलिये परतन्त्र बने हुये हैं।
- चिंतन करो चिन्ता अपने आप दूर हो जायेगी।
- भोक्ता का मूल्य है भोग्य (वस्तु) का नहीं।
- कौटिल्य का अर्थ शास्त्र पढ़ लो - भारत के भीतर क्या-क्या है मालुम पड़ जायेगा किन्तु आप विदेशी साहित्य पढ़ते हो इसीलिए अपने भीतर की शक्ति को ही भूला बैठे हो।

- आज का गणित मात्र गिनने में ही लगा है क्योंकि लौकिक गणित है, जब कि अलौकिक गणित में संख्यात के बाद असंख्यात फिर अनंत / अपार है वह अलौकिक गणित।
- सही-सही मूल्य निकालो अन्यथा मूल्य का मूल्य ही समाप्त हो जायेगा। मूल्यांकन करने वाले का मूल्य है। "मूलस्य भावो मूल्यम्" मूल-जड़-आधार को भूलो मत।
- विदेशी अर्थशास्त्र में नहीं यहाँ के अर्थशास्त्र में ही ये सब बातें मिलेगी।
- अज्ञान से तरना (पार होना) चाहते हो तो गाँवो से ही पार हो सकते हो शहरों में तो अज्ञान की पराकाष्ठा हो रही है, ये भी एक पागलपन ही है। अब पुनः गांवो की ओर लौट रहे हैं।
- बात समझ में तो आती है परन्तु कब? जब दद्दा बन जाते हैं। (अर्थात समय बीत जाता है तब)
- आपके मूल्यांकन पर ही आने वाली पीढ़ी का भविष्य निर्धारित है।

□ □ □

12-1-21 अब उड़ जा रे पंछी मंगलवार

"दो प्रकार की वृत्ति होती है एक तोते की दूसरी कबूतर की। कबूतर जो भी दो स्वामी के पिंजरे में ही रहना पसन्द करता है पर तोते को मेवा-मिष्ठान्न देने पर भी पिंजरा पसन्द नहीं आता, अवसर पाकर आसमान में स्वतंत्र रहता है। ज्ञानी भी विषयों के पिंजरे में रहना पसन्द नहीं करता वह तो मोह का त्याग कर अपनी आत्मा का आनन्द लूटता रहता है।"

विद्या-सूत्र

- आशीर्वाद मिलने पर भी आप उड़ते नहीं तो सोचता हूँ हमारा आशीर्वाद फोकट में ही चला गया।
- पिंजरे से बाहर निकलना है तो एक गुरु मंत्र है- सो जाओ। अर्थात संसार की क्रियाओं से उदासीन हो जाओ।
- रत्नत्रय धारण करने वाले दूसरे को ही बदलते ही है, चारित्र में भी कदम रख देते हैं
- चारित्र धारण करने पर ज्ञान एवं दर्शन में विशुद्धि अवश्य ही आती है।
- ज्ञान मात्र से निर्जरा नहीं दर्शन एवं चारित्र से आगम में अनेको स्थानों पर निर्जरा बतलायी है।
- पंख बाजार से नहीं खरीद सकता, अपने पँखो का उपयोग करो, मोह छोड़ो और उड़ जाओ।
- राग करके संसार बढ़ाने की क्षमता भी आपके पास है, राग तो तोड़ने की क्षमता भी आपके पास है, आप जानो क्या करना है?

o निर्दयी हुये बिना तीन काल में मोह पर विजय प्राप्त नहीं की जा सकती।

o आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने कहा - "निर्दयी भस्मीसात् क्रियाम्" मोह रूपी अर्गला (जंजीर) तभी टूटेगी

o जो घर हम स्वयं बसाते हैं उसे छोड़ने में बहुत तकलीफ होती है परन्तु दृष्टि मोड़ती तो एक पल में छूट सकता है।

o आपलोगों के मुरझाये को देखकर मैं समझ जाता हूँ कि संसार में सुख नहीं।

o जैसे कोर्ट में साक्षी महत्व रखता है वैसे ही आप सब के चहरे साक्षी हैं। ये भी सत्य है आप स्वयं अपना चहरा (मुरझाया) नहीं देख पाते।

o पंख होने पर भी तोता अपार समुद्र की ओर नहीं जाता, क्यों कि जानता है मेरे पंख यदि भर आये तो गिरना पड़ेगा, तैरने में बहुत दिक्कत होगी। आप लोगों की भी इकट्ठा करते-करते ऐसी दशा हो जाती है कि न तो भोगते बनता है और न ही त्याग करते बनता है।

o आचार्यो ने कहा - तोते के भाव करने वाले का जीवन सुखी होता है जब कि कबूतर के भाव वाला दुखी। सौभाग्यशाली होता है वह जो इस प्रकार (तोते) के भाव कर पाता है।

o राग को याद न करें, जो राग का त्याग किये उनकी स्तुति, पूजा, गुणगान, प्रशंसा आदि नव कोटि से करते रहते हैं।

o o o

13-01-21 आया अकेला - जाये अकेला बुधवार

"जिस प्रकार लोहा अन्य वस्तु को अपना लेता है, इससे वह अन्य वस्तु रूप हो जाता है किन्तु सोना दूसरी वस्तु से प्रभावित नहीं होता तो अपनाता भी नहीं, न ही दूसरी वस्तु रूप होता है। इसी प्रकार यदि आत्मा अन्य द्रव्य को अपनाता प्रभावित होता है तो लोहे के समान जंग लगकर समाप्त अर्थात स्वभाव से दूर हो जाता है, स्वर्ण की तरह यदि पकड़ता नहीं तो हमेशा पीत वर्ण का चमकता रहता है।"

विद्या-सूत्र

- भिन्नत्व को लेकर सदैव अन्यत्व एवं एकत्व भावना का चिन्तन करें। इसका फल ये होगा कि जहाँ भी बैठें वहाँ अपनापन अवश्य प्राप्त होगा।
- मैं अपने आप में एक हूँ किन्तु व्यवहार में सबके साथ हूँ। भिन्नता में भी एक का सदैव ध्यान रखना।
- अनंतकालीन संस्कार होने से सभी पर्याय में ही दृष्टि को भटका देते हैं, द्रव्य की ओर नजर ही नहीं जाती
- डॉक्टर लोक प्रतिदिन मृत्यु को निकट से देखते हैं, विश्वास भी है ये टिकेगा नहीं किन्तु जब स्वयं पर आता है तो सब भूल जाते हैं। क्यों कि पर्याय पर ही दृष्टि रखी है।
- जो न अपनी तथा न ही परिचतों की चिकित्सा कर पाये ऐसे व्यक्ति से तो दूर ही रहना चाहिए।
- संवेदन करना अलग है और उससे चिपक जाना अलग है।

- आत्मा से सम्बन्ध रखो, शरीर से नहीं और आत्मा सब की समान है। शरीर से संबंध होने के कारण वियोग में दुख एवं संयोग में हर्ष का अनुभव करते है यह अज्ञान है।
- नाम आत्मा का होता नहीं फिर भी शरीर यहीं है आत्मा चली गयी तो कहा जाता है फलाने चन्द जी चले गये, मतलब वे अब नहीं रहे इस दृष्टि से नाम आत्मा का हो गया।
- अध्यात्म में नाम से चिपके नहीं कि दुख दुख का संवेदन होना शुरु हो जाता है।
- जब तक सत्य को स्वीकारते नहीं तब तक आँख बंद, इन्द्रियों को विश्राम, ध्यान हटाना आदि सब होता है फिर भी संवेदन बना रहता है। यह किसी भी विश्वविद्यालय में नहीं पढाया जाता, हाँ, धर्म की शरण में आने पर ही समाधान मिलता है।
- दो का अस्त हो जाए एक ही रह जाये उसे दोस्त कहते हैं ऐसा धनिष्ठता से हो जाता है।
- हम किसी से दोस्ती नहीं रखते। जब एकमेक नहीं हो सकते तो दोस्ती कैसी। न ही राग और न ही द्वेष रखते हैं।
- एकत्व-अन्यत्व भावना का चिन्तन वरदान है और आर्त-रौद्र परिणाम अभिशाप इसलिये इनसे बचो।
- उपयोग को निश्चल एवं निर्मोही होने पर ही साधु, एकत्व-अन्यत्व की साधना कर पाता है।

ooo

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
1.	23/10/2020	भारतीय संस्कृति-स्वस्थ संस्कृति	नेमीनगर (जैन कॉलोनी) इन्दौर	3
2	31/10/2020	संकल्प से परिवर्तन		4
3.	05/11/2020	नौकर नहीं, उद्योगपति बनें	विजयनगर - इन्दौर	5
4.	06/11/2020	श्वान से लें शिक्षा		6
5.	07/11/2020	बीजत्व नष्ट करने का उपाय		7
6.	08/11/2020	भाव प्रधान है धर्म		8
7.	09/11/2020	दान करो अगरबत्ती सा		9
8.	10/11/2020	हथकरघा के वस्त्रों का लाभ		10
9.	11/11/2020	ऐसे बनेगा जिन मन्दिर		11
10.	12/11/2020	लाभ देशी वस्त्रों के		12
11.	13/11/2020	पहली रोटी गैया की (प्रातः)		13
12.	13/11/2020	मन्दिर शिलान्यास (मध्याह्न)		14
13.	14/11/2020	बिन पानी सब सून		17
14.	15/11/2020	कैसे हों भगवान के दर्शन (प्रातः)		18
15.	15/11/2020	पिच्छिका परिवर्तन समारोह (मध्याह्न)	विजयनगर	19
16.	16/11/2020	पशुपती की अर्चना	महालक्ष्मीनगर	20
17.	17/11/2020	जाने मतलब ऋषभ विहार का	दूधिया	22
18.	18/11/2020	बचें विरुद्ध राज्यातिक्रम से	डबलचौकी	23
19.	19/11/2020	विश्व ने माना- आयुर्वेद की शक्ति को	भमोरी	24
20.	20/11/2020	राम-राज्य लाना है तो	बेडामऊ	25
21.	21/11/2020	भावों का परिणाम	हतनोरी	26
22.	22/11/2020	दया को याद करता यादव	बागन खेड़ा	28
23.	23/11/2020	नदी सम पवित्र, सागर सम विशाल	कन्नौद	29
24.	24/11/2020	भला विराजो जी	खातेगाँव	30
25.	25/11/2020	भाव पलटने से पासा पलटता	खातेगाँव	31

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
26.	26/11/2020	जड़ कर्मों की शक्ति जानों	खातेगाँव	32
27.	27/11/2020	अन्तिम परीक्षा	सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र नेमावर	33
28.	28/11/2020	संगत का असर		34
29.	29/11/2020	माँगने की आदत		35
30.	30/11/2020	अब तो आंखे खोलो		36
31.	01/12/2020	घर में रहें– नारियल की तरह		37
32.	02/12/2020	संस्मरण– खरबूजा को देखकर.....		38
33.	03/12/2020	धरती की महानता		39
34.	04/12/2020	आओ बदले हाथ की रेखायें		40
35.	05/12/2020	उपासना अहिंसा महादेवता की		41
36.	06/12/2020	दर्पण बोलता है		42
37.	07/12/2020	अपनाओ सिंह की प्रवृत्ति		44
38.	08/12/2020	विकृति से प्रकृति की ओर		45
39.	09/12/2020	नागरिक बनो– देश बनेगा		47
40.	10/12/2020	वीतरागता तैराती–राग डूबोता		49
41.	11/12/2020	अब तो दूर हो राग रूपी चिपकन		52
42.	12/12/2020	स्वाश्रित जीवन		54
43.	13/12/2020	आओ लौट चलें....		55
44.	14/12/2020	तन मिला तुम तप करो		59
45.	15/12/2020	बदलो दृष्टि– बदलेगी सृष्टि		61
46.	16/12/2020	सुनो तो समझो		64
47.	17/12/2020	पहचानो असली हीरे को		66
48.	18/12/2020	फार्मूला जहर उतारने का		67
49.	19/12/2020	कर्मों का खेल		69
50.	20/12/2020	कर्त्तत्व बुद्धि रखो		71
51.	21/12/2020	अतिथी संविभाग– धन के करो सही भाग		72

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
52.	22/12/2020	कषाय रूपी अग्नि से बचें	सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र नेमावर	74
53.	23/12/2020	स्वरूप प्रथम प्रतिमा का (प्रातः)		77
54.	23/12/2020	जो मिला उसका उपयोग करो (मध्याह्न)		80
55.	24/12/2020	स्वतंत्र रहे पर स्वछंदन हो (प्रातः)		82
56.	24/12/2020	अन्तर जानें सावद्य एवं आरम्भ में (मध्याह्न)		85
57.	25/12/2020	दान का पात्र कौन?		86
58.	26/12/2020	मुर्छा करके समुर्छन मत बनों		88
59.	27/12/2020	रोना धर्म-पर के लिए		90
60.	28/12/2020	मोक्षमार्ग जटील किन्तु कुटील नहीं		91
61.	29/12/2020	नहीं चाहिए ऐसी कृपा		93
62.	30/12/2020	असम्बद्ध प्रलाप से बचों		95
63.	31/12/2020	वर्ष का ही नहीं- संसार का भी अंत हो		97
64.	01/01/2021	2021 में 21 काम करना है 19 नहीं		99
65.	02/01/2021	कैसे होगी इष्ट की उपलब्धि		101
66.	03/01/2021	टिकिट कौन सा है?		102
67.	04/01/2021	See near कहते हैं सिनियर		104
68.	05/01/2021	सब कुछ आकाश नगर सम		107
69.	06/01/2021	लोकतंत्र में लोभतंत्र नहीं		108
70.	07/01/2021	वास्तविक स्वाद लेना सीखो		110
71.	08/01/2021	कर्म कैसे करें		111
72.	09/01/2021	शिक्षा देती प्रकृति		112
73.	10/01/2021	आओ निर्भिक बनें		114
74.	11/01/2021	भारत में जो है वह कहीं नहीं		116
75.	12/01/2021	अब उड़ जा रे पंछी		118
76.	13/01/2021	आया अकेला-जाये अकेला		120